CBSE Class 12 Hindi Core Question Paper 2026 with Solution PDF-Set 2/1/2

Question Paper with Solutions

Conducted by the Central Board of Secondary Education (CBSE)

निर्धारित समय: 3 Hours **अधिकतम अंक:** 80

सामान्य निर्देश

(i) इस प्रश्न-पत्र में कुल 12 प्रश्न हैं। सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।
(ii) प्रश्नों में दिए गए निर्देशों का पालन करते हुए उत्तर लिखिए।
(iii) प्रत्येक प्रश्न के अंक उसके सामने दर्शाए गए हैं।

1. धूप चमकती है चाँदी की साड़ी पहने
मैके में आई बेटी की तरह मगन है
फूली सरसों से आके लिपट गई है
जैसे दो हमजोली सखियाँ गले मिली हैं
सारंगी बजती है खेतों की गोदी में
दल-के-दल पक्षी उड़ते हैं मीठे स्वर के
अनावरण यह प्राकृत छवि की अमर भारती
रंग-बिरंगी पंखुरियों की खोल चेतना
सौरभ से मह-मह महकाता है दिगंत को
मानव-मन को भर देता है दिव्य दीप्ति से
शिव के नंदी-सा पानी पीता नदिका में
निर्मल नभ अवनी के ऊपर बिसुध खड़ा है
काल काग की तरह ठूँठ पर गुमसुम बैठा
सोई आँखों देख रहा है दिवावसान को। [8 अंक]

1(i). काव्यांश में धूप को किस रूप में चित्रित किया गया है ? [1 अंक]

(A) चाँदी की साड़ी के रूप में
(B) फूली सरसों के रूप में
(C) मैके में आई बेटी के रूप में
(D) हमजोली सखी के रूप में

सही उत्तर: (C) मैके में आई बेटी के रूप में

हल:

अवधारणा:

- उपमा में जिस वस्तु का वर्णन होता है, उसका और जिस रूप से तुलना होती है, उसका भेद समझना आवश्यक है।
- काव्यांश की पंक्ति में प्रयुक्त तुलना ही विकल्प चुनने का आधार है।

चरण 1: निर्णायक पंक्ति पढ़ें कवि कहता है कि धूप 'मैके में आई बेटी की तरह मगन है'। इससे धूप का उल्लास और अपनापन व्यक्त होता है। जिस प्रकार बेटी अपने मायके आकर प्रसन्न होती है, उसी प्रकार धूप ग्रामीण परिवेश में प्रसन्न दिखाई गई है।

चरण 2: शेष विकल्पों की जाँच करें चाँदी की साड़ी धूप की चमक का वस्त्रगत चित्र है, उसका मुख्य मानवीय रूप नहीं। फूली सरसों वह है जिससे धूप लिपटती है। हमजोली सखियों की उपमा धूप और सरसों के मिलने को व्यक्त करती है। इसलिए (A), (B) और (D) प्रश्न का सटीक उत्तर नहीं हैं।

चरण 3: निष्कर्ष धूप को मैके में आई बेटी के रूप में चित्रित किया गया है। सही विकल्प (C) है।

त्वरित सुझाव: प्रश्न में रूप पूछा जाए तो तुलना वाली पंक्ति देखें; वस्त्र और क्रिया को उस रूप का नाम न मानें।

1(ii). फूली हुई सरसों से आकर कौन लिपट गई ? [1 अंक]

(A) धूप

(B) हवा

(C) बेटी

(D) चाँदनी

सही उत्तर: (A) धूप

हल:

अवधारणा:

- कविता में लगातार आती पंक्तियों का कर्ता पूर्ववर्ती पंक्ति से भी स्पष्ट होता है।
- उपमा में आए पात्र और वास्तविक वर्ण्य विषय को अलग रखकर उत्तर चुनना चाहिए।

चरण 1: लिपटने वाले कर्ता को पहचानें आरंभ में धूप का वर्णन है। उसके बाद 'फूली सरसों से आके लिपट गई है' कहा गया है। इस क्रिया की कर्ता वही धूप है। खेत में फैली धूप और सरसों का निकट संबंध कवि ने आलिंगन के रूप में दिखाया है।

चरण 2: अन्य विकल्पों को हटाएँ हवा और चाँदनी के सरसों से लिपटने का उल्लेख इस पंक्ति में नहीं है, इसलिए (B) और (D) गलत हैं। बेटी धूप की प्रसन्नता समझाने वाली उपमा है; वह अलग से खेत में आई हुई वास्तविक पात्र नहीं है। अतः (C) भी उचित नहीं है।

चरण 3: निष्कर्ष फूली हुई सरसों से आकर धूप लिपट गई है। सही विकल्प (A) है।

त्वरित सुझाव: काव्य में सर्वनाम या छोड़े गए कर्ता का अर्थ समझने के लिए ठीक पहले की पंक्ति से उसका संबंध जोड़ें।

1(iii). खेतों की गोदी में सारंगी बजती है – [1 अंक]

(A) खेतों के बीच से गुजरती हवा की ध्वनि की

(B) खेतों के ऊपर उड़ते पक्षियों के मीठे स्वरों की

(C) पक्षियों को उड़ाने के लिए किसान की बाँसुरी की

(D) पक्षियों को बुलाने के लिए छोटे बच्चों की

सही उत्तर: (B) खेतों के ऊपर उड़ते पक्षियों के मीठे स्वरों की

हल:

अवधारणा:

- श्रव्य बिंब किसी ध्वनि को कल्पना के माध्यम से सुनाई देने योग्य रूप में प्रस्तुत करता है।
- काव्य-पंक्तियों के पारस्परिक संबंध से किसी वाद्य के उल्लेख का प्रतीकात्मक आशय मिलता है।

चरण 1: पास की पंक्ति से अर्थ जोड़ें 'सारंगी बजती है खेतों की गोदी में' के तुरंत बाद 'दल-के-दल पक्षी उड़ते हैं मीठे स्वर के' आता है। अतः सारंगी का मधुर संगीत पक्षियों के मधुर कलरव का बिंब है। यह ग्रामीण वातावरण की संगीतमयता को उभारता है।

चरण 2: दिए गए विकल्प परखें विकल्प (A) में हवा की ध्वनि है, जबकि इस प्रसंग में मीठे स्वर पक्षियों के बताए गए हैं। किसान की बाँसुरी और बच्चों द्वारा पक्षियों को बुलाने का कोई उल्लेख नहीं मिलता, इसलिए (C) तथा (D) भी असंगत हैं। विकल्प (B) निकटवर्ती पंक्ति के अर्थ से सीधे मेल खाता है।

चरण 3: निष्कर्ष खेतों के ऊपर उड़ते पक्षियों के मीठे स्वरों की सारंगी बजती है। सही विकल्प (B) है।

त्वरित सुझाव: संगीत या ध्वनि वाले बिंब का अर्थ तय करते समय उसके बाद आने वाली पंक्ति में ध्वनि के वास्तविक स्रोत को खोजें।

1(iv). ठूँठ पर बैठे काल की तुलना किससे और किस आधार पर की गई है ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- उपमा का उत्तर देते समय उपमेय, उपमान और दोनों का साझा गुण बताना चाहिए।
- दिए गए काव्यांश की मुद्रा और क्रिया ही तुलना का आधार हैं।

चरण 1: तुलना का पात्र बताएँ 'काल काग की तरह ठूँठ पर गुमसुम बैठा' में काल की तुलना काग अर्थात कौए से की गई है। यहाँ काल उपमेय और काग उपमान है। ठूँठ पर बैठने का दृश्य समय को भी एक मौन दर्शक का रूप देता है।

चरण 2: तुलना का आधार स्पष्ट करें कौए की तरह काल भी ठूँठ पर गुमसुम, निश्चल बैठा हुआ कल्पित है। वह 'सोई आँखों' से दिन का अंत देख रहा है। मौन बैठने और निष्क्रिय भाव से दिवावसान देखने की मुद्रा इस तुलना का आधार है; कविता किसी अन्य गुण की चर्चा नहीं करती।

चरण 3: निष्कर्ष काल की तुलना कौए से की गई है, क्योंकि उसे कौए की तरह ठूँठ पर गुमसुम बैठकर दिन का अंत देखते हुए कल्पित किया गया है।

त्वरित सुझाव: किससे और किस आधार पर जैसे संयुक्त प्रश्न में उपमान का नाम और समान मुद्रा दोनों स्पष्ट लिखें।

1(v). नदी में पड़ते आकाश के प्रतिबिंब के बारे में कवि ने क्या कल्पना की है ? स्पष्ट कीजिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- प्राकृतिक दृश्य की काव्यात्मक कल्पना में दिखाई देने वाला प्रतिबिंब किसी सजीव क्रिया का रूप ले सकता है।
- उपमा का अर्थ समझाते समय वास्तविक दृश्य और उससे जुड़ी कवि की कल्पना दोनों स्पष्ट करने चाहिए।

चरण 1: वास्तविक दृश्य पहचानें निर्मल आकाश नदी के जल में प्रतिबिंबित हो रहा है। ऊपर फैला हुआ आकाश और नीचे जल में उसकी छवि मिलकर ऐसा दृश्य बनाते हैं मानो आकाश नदी की ओर झुका हुआ हो। कवि ने इस दृश्य को केवल प्रतिबिंब कहकर नहीं छोड़ा, बल्कि उसे सजीव रूप में देखा है।

चरण 2: नंदी की उपमा समझाएँ कवि की कल्पना है कि निर्मल आकाश शिव के नंदी के समान नदी में पानी पी रहा है। 'शिव के नंदी-सा पानी पीता नदिका में' इस कल्पना को व्यक्त करता है। धरती के ऊपर खड़ा आकाश बेसुध और तन्मय प्रतीत होता है। जैसे नंदी पानी पीते समय नदी की ओर झुकता है, वैसे ही जल में उतरती आकाश की छवि पानी पीने का आभास देती है।

चरण 3: निष्कर्ष कवि ने नदी में प्रतिबिंबित निर्मल आकाश को शिव के नंदी के समान नदी का पानी पीते हुए कल्पित किया है। वह धरती के ऊपर तन्मय और बेसुध खड़ा जान पड़ता है।

त्वरित सुझाव: प्रतिबिंब वाले प्रश्न में पहले जल में दिखने वाला दृश्य बताएँ, फिर कवि ने उसे जिस सजीव रूप में देखा है वह समझाएँ।

1(vi). काव्यांश के आधार पर ग्रामीण प्रकृति के सौंदर्य का वर्णन कीजिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- प्रकृति-वर्णन में रंग, प्रकाश, ध्वनि और गंध से संबंधित बिंब मिलकर वातावरण रचते हैं।
- उत्तर में काव्यांश के प्रत्यक्ष विवरणों को जोड़ना चाहिए; बाहरी दृश्य या घटनाएँ नहीं जोड़नी चाहिए।

चरण 1: प्रकाश और मेल-मिलाप का दृश्य बताएँ ग्रामीण प्रकृति में चमकती धूप चाँदी की साड़ी पहने प्रसन्न बेटी जैसी है। वह फूली सरसों से ऐसे लिपटती है जैसे दो हमजोली सखियाँ मिल रही हों। इससे खेतों में फैला प्रकाश, फूलों का आकर्षण और प्रकृति का आत्मीय उल्लास एक साथ व्यक्त होते हैं।

चरण 2: ध्वनि, गंध और आकाश का चित्र पूरा करें खेतों के ऊपर उड़ते पक्षियों के मधुर स्वर सारंगी के संगीत जैसे लगते हैं। रंग-बिरंगी पंखुरियाँ और फूलों की सुगंध दिशाओं को महका देती हैं। यह सौंदर्य मानव-मन को दिव्य दीप्ति से भरता है। नदी में प्रतिबिंबित निर्मल आकाश नंदी की तरह जल पीता जान पड़ता है। अंत में ठूँठ पर गुमसुम बैठे काल की कल्पना दिन ढलने के शांत वातावरण को सामने लाती है।

चरण 3: निष्कर्ष काव्यांश में ग्रामीण प्रकृति प्रकाश, फूलों के रंग और सुगंध, पक्षियों के मधुर कलरव तथा नदी में झलकते निर्मल आकाश से सुंदर बनी है। उसका आत्मीय, उल्लासपूर्ण और शांत सौंदर्य मन को आलोकित करता है।

त्वरित सुझाव: प्रकृति-वर्णन के उत्तर में कविता से प्रकाश, रंग, ध्वनि और गंध का एक-एक संकेत लेकर उन्हें संगत रूप से जोड़ें।

---

2. संस्कृति और सभ्यता - ये दोनों दो शब्द हैं और उनके अर्थ भी अलग-अलग हैं। सभ्यता मनुष्य का वह गुण है जिससे वह अपनी बाहरी उन्नति करता है। संस्कृति मनुष्य का वह गुण है जिससे वह अपनी भीतरी उन्नति करता है, दया, ममता और परोपकार आदि सीखता है, गीत-नाद, कविता, चित्र और मूर्ति से आनन्द लेने की योग्यता हासिल करता है। एक वह भी समय था जब आदमी को घर बनाना नहीं आता था, जब वह पेड़ की छाया या पहाड़ की खोह में वास करता था; जब खेती करना भी नहीं आता था और वह कन्द-मूल खाकर गुजारा करता था; जब उसे कपड़ा बुनना भी नहीं आता था और वह या तो निर्वस्त्र रहता था या पेड़ों की छाल या जानवरों की खाल पहनकर रहता था। इस हालत को मनुष्य की असभ्यता की हालत कहते हैं। लेकिन, इस हालत से निकलकर आदमी ज्यों-ज्यों आगे बढ़ा, त्यों-त्यों वह सभ्य होता गया। यानी जब आदमी खेती करके अनाज उपजाने लगा, अनाज को आग से पकाकर खाने लगा, घर बनाकर रहने और कपड़े बुनकर उन्हें पहनने लगा, तब वह असभ्यता से निकलकर सभ्यता की ओर आने लगा। आज भी रेलगाड़ी, मोटर और हवाई जहाज, लंबी-चौड़ी सड़कें और बड़े-बड़े मकान, अच्छा भोजन और अच्छी पोशाक, ये सभ्यता की पहचान हैं और जिस देश में इनकी जितनी ही अधिकता है उस देश को हम उतना ही सभ्य मानते हैं। मगर, संस्कृति इन सबसे भिन्न है। वह मोटर नहीं, मोटर बनाने की कला है; मकान नहीं, मकान बनाने की रुचि है। भोजन की सामग्री हम सभ्यता के जरिये पैदा करते हैं, लेकिन जिस ढंग से हम भोजन तैयार करते हैं और जिस कला से हम उसे खाते हैं वह हमारी संस्कृति कहलाती है। [10 अंक]

2(i). संस्कृति सभ्यता से भिन्न है क्योंकि संस्कृति – [1 अंक]

(A) सभ्यता की अपेक्षा स्थूल और विशद होती है।

(B) सभ्यता की अपेक्षा अत्यंत सूक्ष्म होती है।

(C) समन्वयमूलक है और सभ्यता सूक्ष्म होती है।

(D) आदर्शमूलक है और सभ्यता यथार्थ होती है।

सही उत्तर: (B) सभ्यता की अपेक्षा अत्यंत सूक्ष्म होती है।

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश में बाहरी उन्नति और भीतरी उन्नति का भेद पहचानना आवश्यक है।
- संस्कृति का संबंध संवेदना, रुचि और कलात्मक योग्यता से है।

चरण 1: पाठ का संकेत गद्यांश सभ्यता को बाहरी और संस्कृति को भीतरी उन्नति बताता है। मोटर और मकान दिखाई देने वाली भौतिक वस्तुएँ हैं, जबकि उन्हें बनाने की कला और रुचि व्यक्ति की आंतरिक योग्यता हैं। इसलिए संस्कृति अपेक्षाकृत सूक्ष्म है।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच (A) संस्कृति को स्थूल कहकर इस भेद को उलट देता है। (C) में सभ्यता को सूक्ष्म कहा गया है, जबकि पाठ उसके भौतिक साधन गिनाता है। (D) का आदर्श और यथार्थ वाला विभाजन इस गद्यांश का प्रतिपादित आधार नहीं है।

चरण 3: निष्कर्ष संस्कृति सभ्यता की अपेक्षा अत्यंत सूक्ष्म होती है। अतः सही विकल्प (B) है।

त्वरित सुझाव: मोटर और मकान को वस्तु, तथा कला और रुचि को भीतरी गुण मानकर विकल्प चुनें।

2(ii). गद्यांश के अनुसार 'सभ्यता' का अभिप्राय क्या है ? [1 अंक]

(A) मानव को कलाकार बना देने की विशेषता

(B) मानव के स्वाधीन चिंतन की गाथा

(C) मनुष्य की ऐश्वर्यपूर्ण कहानी

(D) मनुष्य के भौतिक विकास का क्रम

सही उत्तर: (D) मनुष्य के भौतिक विकास का क्रम

हल:

अवधारणा:

- शब्द का अभिप्राय गद्यांश में दी गई परिभाषा और उदाहरणों से निर्धारित होता है।
- सभ्यता के उदाहरण भोजन, वस्त्र, आवास तथा यातायात के साधन हैं।

चरण 1: परिभाषा का अर्थ लेखक कहता है कि सभ्यता से मनुष्य अपनी बाहरी उन्नति करता है। खेती, अनाज पकाना, घर बनाना और कपड़ा बुनना उसके भौतिक जीवन की क्रमिक प्रगति दिखाते हैं। रेलगाड़ी और हवाई जहाज इसी विकास के आगे के उदाहरण हैं।

चरण 2: विकल्पों का परीक्षण (A) की कलात्मक योग्यता संस्कृति से संबंधित है। (B) का स्वाधीन चिंतन यहाँ सभ्यता की परिभाषा नहीं है। (C) की ऐश्वर्यपूर्ण कहानी विकास की इस प्रक्रिया का सटीक अर्थ नहीं बताती। (D) बाहरी प्रगति के सभी उदाहरणों को समेटता है।

चरण 3: निष्कर्ष सभ्यता का अभिप्राय मनुष्य के भौतिक विकास का क्रम है। अतः सही विकल्प (D) है।

त्वरित सुझाव: सभ्यता के अर्थ के लिए खेती, मकान और यातायात जैसे पाठ में दिए भौतिक उदाहरण देखें।

2(iii). निम्नलिखित कथन और कारण को ध्यान से पढ़िए और सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प का चयन कर लिखिए :

कथन : संस्कृति से मनुष्य दया, ममता, परोपकार आदि गुण और कला का रसास्वादन करना सीखता है।

कारण : संस्कृति मनुष्य के मानवीय मूल्यों और कौशल का विकास करती है। [1 अंक]

(A) कथन सही है, कारण गलत है।

(B) कथन गलत है, कारण सही है।

(C) कथन और कारण दोनों सही हैं तथा कारण, कथन की सही व्याख्या करता है।

(D) कथन और कारण दोनों गलत हैं।

सही उत्तर: (C) कथन और कारण दोनों सही हैं तथा कारण, कथन की सही व्याख्या करता है।

हल:

अवधारणा:

- कथन और कारण की सत्यता पहले अलग-अलग परखनी चाहिए।
- इसके बाद देखना चाहिए कि कारण कथन में बताए गुणों की व्याख्या करता है या नहीं।

चरण 1: कथन की सत्यता गद्यांश में स्पष्ट है कि संस्कृति से व्यक्ति दया, ममता और परोपकार सीखता है तथा गीत, कविता, चित्र और मूर्ति का आनंद लेने की योग्यता पाता है। इसलिए कथन सही है।

चरण 2: कारण की सत्यता दया और परोपकार मानवीय मूल्य हैं। कलाओं का आनंद लेने और निर्माण की कला समझने की योग्यता आंतरिक कौशल है। संस्कृति इनका विकास करती है, इसलिए कारण भी सही है।

चरण 3: व्याख्या का संबंध मानवीय मूल्यों और कौशल के विकास से ही कथन में गिनाए संवेदनात्मक तथा कलात्मक गुण विकसित होते हैं। अतः कारण कथन की उचित व्याख्या है। (A) कारण को, (B) कथन को और (D) दोनों को गलत बताता है; ये तीनों पाठ से

असंगत हैं।

चरण 4: निष्कर्ष कथन और कारण दोनों सही हैं तथा कारण, कथन की सही व्याख्या करता है। सही विकल्प (C) है।

त्वरित सुझाव: पहले दया को मानवीय मूल्य और कला के रसास्वादन को आंतरिक योग्यता से जोड़ें।

2(iv). 'सभ्यता' और 'संस्कृति' के अंतर को उचित उदाहरण द्वारा स्पष्ट कीजिए। [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- सभ्यता मनुष्य के बाहरी जीवन के साधनों का विकास है।
- संस्कृति उसके भीतर की रुचि, कला, संवेदना और संस्कारों का विकास है।

चरण 1: मूल अंतर गद्यांश के अनुसार सभ्यता मनुष्य की बाहरी उन्नति कराती है, जबकि संस्कृति उसकी भीतरी उन्नति करती है। इसलिए सुविधा देने वाली वस्तु और उसके पीछे की कलात्मक रुचि को अलग पहचानना चाहिए।

चरण 2: पाठ का उदाहरण मोटर एक भौतिक साधन है, इसलिए वह सभ्यता का उदाहरण है; मोटर बनाने की कला संस्कृति का उदाहरण है। इसी प्रकार मकान सभ्यता की उपलब्धि है और मकान बनाने की रुचि संस्कृति से संबंधित है।

चरण 3: निष्कर्ष सभ्यता बाहरी साधनों की उन्नति है और संस्कृति आंतरिक गुणों की। उदाहरणतः मकान सभ्यता है तथा उसे बनाने की रुचि संस्कृति है।

त्वरित सुझाव: अंतर लिखते समय पाठ का एक ही उदाहरण लें और उसमें वस्तु तथा कला दोनों स्पष्ट करें।

2(v). 'सभ्यता और संस्कृति दोनों साथ-साथ चलते हैं' – कैसे ? उदाहरण देकर इस कथन की पुष्टि कीजिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- सभ्यता और संस्कृति का अंतर उनके परस्पर संबंध को समाप्त नहीं करता।
- भौतिक सामग्री का उपयोग करने में मनुष्य की रुचि और कला भी प्रकट होती है।

चरण 1: कथन का आशय मनुष्य के जीवन में बाहरी साधन और भीतरी योग्यता दोनों काम करते हैं। सभ्यता जीवन की आवश्यक सामग्री और सुविधाएँ उपलब्ध कराती है, जबकि संस्कृति उन साधनों के निर्माण तथा उपयोग में कलात्मकता और रुचि प्रकट करती है। इसलिए दोनों अलग अर्थ रखते हुए भी एक ही जीवन में साथ दिखाई देते हैं।

चरण 2: भोजन द्वारा पुष्टि गद्यांश कहता है कि भोजन की सामग्री सभ्यता के जरिए पैदा होती है। उस सामग्री से भोजन तैयार करने का ढंग और भोजन करने की कला संस्कृति कहलाती है। सामग्री के बिना भोजन नहीं बनेगा और उसे तैयार करने तथा खाने के ढंग में संस्कृति व्यक्त होगी। यह उदाहरण दोनों के साथ चलने को स्पष्ट करता है।

चरण 3: निष्कर्ष सभ्यता साधन देती है और संस्कृति उनके उपयोग की कला तथा रुचि विकसित करती है। भोजन की सामग्री पैदा करना सभ्यता है; भोजन तैयार करने और खाने का ढंग संस्कृति है। इस प्रकार दोनों जीवन में साथ-साथ चलते हैं।

त्वरित सुझाव: भोजन के उदाहरण में सामग्री, पकाने का ढंग और खाने की कला को अलग पहचानकर संबंध समझाएँ।

2(vi). "संस्कृति असल में शरीर का नहीं आत्मा का गुण है।" इस कथन को गद्यांश के आधार पर स्पष्ट कीजिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- यहाँ आत्मा से आशय मनुष्य के भीतरी गुणों, संवेदनाओं और रुचियों से है।
- कथन की व्याख्या गद्यांश के मानवीय और कलात्मक उदाहरणों से करनी है।

चरण 1: भीतरी उन्नति का अर्थ संस्कृति का संबंध केवल शरीर को सुविधा देने वाली वस्तुओं से नहीं, मनुष्य के आंतरिक विकास से है। गद्यांश के अनुसार संस्कृति से दया, ममता और परोपकार जैसे गुण आते हैं। ये व्यक्ति की संवेदना और दूसरों के प्रति व्यवहार में प्रकट होते हैं, बाहरी वस्तुओं की अधिकता में नहीं।

चरण 2: कला और रुचि का आधार गीत, कविता, चित्र और मूर्ति से आनंद लेने की योग्यता भी मन का गुण है। इसी प्रकार लेखक संस्कृति को मोटर के स्थान पर मोटर बनाने की कला तथा मकान के स्थान पर उसे बनाने की रुचि कहता है। इन उदाहरणों से स्पष्ट होता है कि संस्कृति वस्तु से अधिक व्यक्ति की भीतरी संवेदनशीलता और कलात्मक दृष्टि में रहती है।

चरण 3: निष्कर्ष संस्कृति मनुष्य की दया, ममता, परोपकार, कलाप्रेम और रुचि का विकास करती है। ये आंतरिक गुण हैं। इसलिए गद्यांश के अनुसार संस्कृति शरीर की बाहरी सुविधा के बजाय आत्मा अर्थात् मनुष्य के भीतरी व्यक्तित्व का गुण है।

त्वरित सुझाव: आत्मा का अर्थ समझाते हुए पाठ के दया, परोपकार और कला के रसास्वादन वाले उदाहरण जोड़ें।

2(vii). सभ्यता के विकास से पूर्व मनुष्य की क्या स्थिति थी ? सभ्यता के विकास के क्या परिणाम हुए ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- प्रश्न के दो भाग हैं: सभ्यता से पहले की स्थिति और विकास के बाद के परिवर्तन।
- उत्तर में आवास, भोजन और वस्त्र की अवस्थाओं का क्रम बनाए रखना चाहिए।

चरण 1: विकास से पूर्व की स्थिति मनुष्य को घर बनाना नहीं आता था; वह पेड़ की छाया या पहाड़ की खोह में रहता था। खेती का ज्ञान न होने से कंद-मूल खाकर गुजारा करता था। कपड़ा बुनना नहीं जानता था, इसलिए निर्वस्त्र रहता था या पेड़ों की छाल और जानवरों की खाल पहनता था। लेखक इसे असभ्यता की अवस्था कहता है।

चरण 2: विकास के परिणाम सभ्यता के विकास से मनुष्य खेती करके अनाज उगाने और उसे आग पर पकाकर खाने लगा। वह घर बनाकर रहने और कपड़ा बुनकर पहनने लगा। आगे चलकर रेलगाड़ी, मोटर, हवाई जहाज, चौड़ी सड़कें और बड़े मकान बने। भोजन और पोशाक भी बेहतर हुए। इन उपलब्धियों से उसकी बाहरी जीवन-स्थितियाँ उन्नत हुईं।

चरण 3: निष्कर्ष पहले मनुष्य प्राकृतिक आश्रयों में रहता, कंद-मूल खाता और छाल या खाल पहनता था। सभ्यता के विकास से खेती, पका भोजन, घर और बुने वस्त्र मिले; आगे यातायात तथा अन्य सुविधाओं ने उसके भौतिक जीवन को उन्नत किया।

त्वरित सुझाव: पहले और बाद की तुलना में आवास, भोजन और वस्त्र के तीनों पक्ष अवश्य शामिल करें।

3(i). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए :

'रेडियो मूलतः एकरेखीय (लीनियर) माध्यम है।' – कैसे ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रेडियो श्रव्य माध्यम है; उसका संदेश समय के निश्चित क्रम में आगे बढ़ता है।
- श्रोता अखबार की तरह पीछे लौटकर छूटी हुई पंक्ति तुरंत दोबारा नहीं पढ़ सकता।

चरण 1: एक निश्चित क्रम में प्रसारण रेडियो पर शब्द, वाक्य और समाचार एक के बाद एक प्रसारित होते हैं। प्रसारण का क्रम और गति प्रसारक निर्धारित करता है। श्रोता किसी अगले अंश को पहले नहीं सुन सकता और सामान्य प्रसारण में पहले बीत चुके अंश को अपनी इच्छा से फिर नहीं सुन सकता।

चरण 2: भाषा पर प्रभाव इसी कारण रेडियो के लिए छोटे वाक्य, सहज शब्द और स्पष्ट उच्चारण आवश्यक हैं। जटिल वाक्य या कठिन सूचना श्रोता को उलझा सकती है, क्योंकि उसे अर्थ समझने के लिए पीछे लौटने का अवसर नहीं मिलता। मुख्य बात सुनते ही समझ में आनी चाहिए।

चरण 3: निष्कर्ष रेडियो में सूचना निश्चित समय-क्रम में एक बार आगे बढ़ती है। श्रोता अखबार की तरह पीछे लौटकर छूटा अंश दोबारा नहीं पढ़ सकता, न अगला अंश पहले सुन सकता है। इसलिए रेडियो मूलतः एकरेखीय माध्यम है।

त्वरित सुझाव: एकरेखीयता समझाते समय निश्चित क्रम और पीछे लौटकर न सुन पाने, दोनों का उल्लेख करें।

3(ii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए :

एंकर-बाइट से क्या तात्पर्य है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- एंकर समाचार प्रस्तुत करने वाला व्यक्ति है और बाइट किसी संबंधित व्यक्ति के कथन का छोटा रिकॉर्ड किया हुआ अंश है।
- समाचार की पुष्टि या किसी पक्ष को सामने लाने के लिए एंकर की सूचना के साथ बाइट प्रसारित की जाती है।

चरण 1: एंकर और बाइट पहचानना टेलीविजन समाचार में एंकर पहले घटना का परिचय तथा आवश्यक सूचना देता है। इसके बाद घटना से संबंधित व्यक्ति, प्रत्यक्षदर्शी या विशेषज्ञ की रिकॉर्ड की गई संक्षिप्त प्रतिक्रिया दिखाई और सुनाई जाती है। इसी रिकॉर्ड किए हुए कथन को बाइट कहा जाता है।

चरण 2: प्रस्तुति की विशेषता समझना इस प्रकार समाचार का आधार एंकर की प्रस्तुति होती है, जबकि बाइट संबंधित व्यक्ति का पक्ष सीधे दर्शकों तक पहुँचाती है। दोनों के मेल से खबर अधिक स्पष्ट और विश्वसनीय बनती है। बाइट पूरी लंबी बातचीत नहीं, समाचार से जुड़ा चुना हुआ छोटा अंश होती है।

चरण 3: निष्कर्ष एंकर-बाइट टेलीविजन समाचार की वह शैली है जिसमें एंकर खबर का परिचय देता है और फिर संबंधित व्यक्ति, प्रत्यक्षदर्शी या विशेषज्ञ के कथन का रिकॉर्ड किया हुआ संक्षिप्त अंश प्रसारित होता है। इससे खबर को स्पष्टता और प्रामाणिकता मिलती है।

त्वरित सुझाव: एंकर-बाइट की परिभाषा में एंकर की खबर और संबंधित व्यक्ति की रिकॉर्ड की गई प्रतिक्रिया जोड़ें।

3(iii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए :

बीट रिपोर्टिंग और विशेषीकृत रिपोर्टिंग को समझाते हुए दोनों में अंतर स्पष्ट कीजिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- बीट रिपोर्टिंग किसी निर्धारित क्षेत्र की नियमित खबरें जुटाने का कार्य है।
- विशेषीकृत रिपोर्टिंग में विषय का गहरा ज्ञान, संदर्भ और विश्लेषण प्रमुख होते हैं।

चरण 1: दोनों का अर्थ स्पष्ट करना अखबार या समाचार संस्था संवाददाता को राजनीति, अपराध, शिक्षा अथवा खेल जैसा निश्चित क्षेत्र सौंपती है। उस क्षेत्र की नियमित घटनाओं और गतिविधियों की खबरें देना बीट रिपोर्टिंग कहलाता है। विशेषीकृत रिपोर्टिंग में किसी विषय का अध्ययन करके उसकी पृष्ठभूमि, कारणों और प्रभावों की गहराई से पड़ताल की जाती है।

चरण 2: मुख्य अंतर बताना बीट रिपोर्टर का जोर अपने क्षेत्र में रोज होने वाली घटनाओं की जानकारी और संपर्क बनाए रखने पर होता है। विशेषीकृत रिपोर्टर से विषयगत विशेषज्ञता तथा तथ्यपूर्ण विश्लेषण की अपेक्षा होती है। दोनों के विषय समान हो सकते हैं; अंतर मुख्यतः रिपोर्ट की गहराई और विषय के विशेष ज्ञान में है।

चरण 3: निष्कर्ष बीट रिपोर्टिंग में संवाददाता अपने निर्धारित क्षेत्र की नियमित घटनाओं की खबर देता है। विशेषीकृत रिपोर्टिंग में विषय का गहरा ज्ञान लेकर उसकी पृष्ठभूमि, कारणों और प्रभावों का विश्लेषण किया जाता है। मुख्य अंतर नियमित समाचार-संग्रह और विशेषज्ञतापूर्ण पड़ताल का है।

त्वरित सुझाव: अंतर केवल विषयों का न बताएँ; नियमित खबर और विशेषज्ञतापूर्ण विश्लेषण की तुलना करें।

3(iv). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए :

पाठकों का स्थायी स्तंभ कौन-सा होता है और कैसे ? उल्लेख कीजिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- संपादक के नाम पत्र समाचारपत्र में पाठकों की अभिव्यक्ति का नियमित मंच है।
- इस स्तंभ में पाठक खबरों पर प्रतिक्रिया देने के साथ सार्वजनिक समस्याएँ और सुझाव रखते हैं।

चरण 1: स्थायी स्तंभ पहचानना समाचारपत्र में पाठकों का स्थायी स्तंभ संपादक के नाम पत्र होता है। इसमें पाठक प्रकाशित खबरों, लेखों या संपादकीय पर अपनी सहमति, असहमति और प्रतिक्रिया भेजते हैं। वे स्थानीय कठिनाइयों तथा व्यापक जनहित के विषयों की ओर भी ध्यान खींचते हैं।

चरण 2: पाठकीय भागीदारी समझना इस स्तंभ के माध्यम से पाठक केवल सूचना ग्रहण करने वाले नहीं रहते, बल्कि समाचारपत्र के संवाद में भाग लेते हैं। उनके विचार और सुझाव नियमित रूप से प्रकाशित होते हैं। इस प्रकार पाठकों की आवाज को स्थान मिलता है और समाचारपत्र तथा समाज के बीच परस्पर संवाद बना रहता है।

चरण 3: निष्कर्ष संपादक के नाम पत्र पाठकों का स्थायी स्तंभ है। इसमें वे प्रकाशित सामग्री पर प्रतिक्रिया, जनसमस्याएँ और सुझाव भेजते हैं। उनके विचार नियमित रूप से प्रकाशित होने से समाचारपत्र में पाठकीय भागीदारी तथा पाठकों और संपादक के बीच संवाद बना रहता है।

त्वरित सुझाव: स्तंभ का नाम लिखकर प्रतिक्रिया, जनसमस्याएँ और पाठकीय संवाद में से प्रमुख कार्य स्पष्ट करें।

3(v). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए :

विश्लेषणात्मक रिपोर्ट किसे कहते हैं ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- विश्लेषणात्मक रिपोर्ट घटना की सूचना के साथ उसके कारणों और परिणामों की पड़ताल करती है।
- इसमें तथ्य, पृष्ठभूमि और संबंधित पक्षों का अध्ययन आवश्यक है।

चरण 1: रिपोर्ट का स्वरूप बताना साधारण समाचार मुख्यतः बताता है कि क्या, कब और कहाँ हुआ। विश्लेषणात्मक रिपोर्ट इससे आगे जाकर घटना क्यों हुई और उसके क्या प्रभाव हो सकते हैं, इन प्रश्नों का उत्तर खोजती है। इसलिए उसमें घटना की पृष्ठभूमि और उससे जुड़े तथ्यों का विस्तृत अध्ययन किया जाता है।

चरण 2: तथ्य और विवेचन जोड़ना रिपोर्टर विश्वसनीय सूचनाओं तथा संबंधित पक्षों के आधार पर कारणों और परिणामों का विवेचन करता है। केवल अपनी पसंद या अनुमान को तथ्य नहीं मानता। इस विवेचन से पाठक घटना के अलग-अलग पहलुओं और व्यापक संदर्भ को समझ पाता है; यही विश्लेषणात्मक रिपोर्ट की उपयोगिता है।

चरण 3: निष्कर्ष जिस रिपोर्ट में किसी घटना के तथ्यों के साथ उसकी पृष्ठभूमि, कारणों और परिणामों का विवेचन किया जाता है, उसे विश्लेषणात्मक रिपोर्ट कहते हैं। यह विश्वसनीय सूचनाओं और संबंधित पक्षों के आधार पर घटना के विभिन्न पहलुओं को स्पष्ट करती है।

त्वरित सुझाव: परिभाषा में घटना की सूचना के साथ क्यों और उसके प्रभाव, इन दो बिंदुओं को जोड़ें।

4(i). निम्नलिखित दिए गए विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग 120 शब्दों में रचनात्मक लेख लिखिए :

जंक फूड का बढ़ता चलन [6 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रचनात्मक लेख में विषय का प्रभावशाली परिचय, विचारों का क्रमबद्ध विस्तार और सार्थक समापन होता है। यहाँ स्वाद, सुविधा और विज्ञापन के आकर्षण के साथ स्वास्थ्य पर पड़ने वाले प्रभाव को जोड़ना आवश्यक है।
- लगभग 120 शब्दों के लेख में छोटे, स्पष्ट वाक्य रखें। किसी बनावटी आँकड़े के स्थान पर परिचित उदाहरण दें और अंत में व्यावहारिक समाधान प्रस्तुत करें।

चरण 1: प्रारूप और विषयवस्तु की योजना लेख का आरंभ घर के भोजन और बाजार के त्वरित भोजन के बीच बदलती पसंद से किया जा सकता है। मध्य भाग में व्यस्त दिनचर्या, विज्ञापन और मित्रों के प्रभाव को कारण बनाएँ। फिर अधिक सेवन से होने वाली परेशानियाँ और संतुलित भोजन अपनाने का उपाय दें। शीर्षक संक्षिप्त और सीधे विषय से जुड़ा रखें। विचारों के बीच कारण और परिणाम का संबंध स्पष्ट हो। रचनात्मक लेख में पत्र की तरह पता, संबोधन या हस्ताक्षर देने की आवश्यकता नहीं है। भाषा सहज रखें और अनावश्यक दोहराव से बचें।

चरण 2: पूर्ण नमूना रचनात्मक लेख जंक फूड का बढ़ता चलन

आज घर की रसोई की खुशबू पर बाजार के चटपटे स्वाद का आकर्षण भारी पड़ रहा है। पिज्जा, बर्गर और पैकेटबंद खाद्य पदार्थ बच्चों तथा युवाओं की पहली पसंद बनते जा रहे हैं। व्यस्त दिनचर्या, आकर्षक विज्ञापन और मित्रों की देखा-देखी इस चलन को बढ़ाते हैं। स्वाद और सुविधा के पीछे छिपी अधिक चीनी, नमक तथा वसा स्वास्थ्य के लिए हानिकारक हो सकती है। लगातार ऐसा भोजन खाने से मोटापे और पाचन संबंधी परेशानियों का खतरा बढ़ता है। हमें स्वाद का विरोध नहीं, भोजन में संतुलन सीखना चाहिए। घर का ताजा भोजन, फल और अंकुरित अनाज बेहतर विकल्प हैं। अभिभावक स्वयं अच्छी आदतें अपनाएँ और विद्यालय पौष्टिक भोजन को प्रोत्साहित करें। स्वस्थ भोजन का चुनाव ही स्वस्थ भविष्य की नींव है।

चरण 3: निष्कर्ष इस लेख में जंक फूड के आकर्षण, उसके बढ़ते चलन के कारण, स्वास्थ्य संबंधी चिंता और संतुलित भोजन के उपाय क्रम से प्रस्तुत किए गए हैं।

त्वरित सुझाव: इस विषय पर लिखते समय पिज्जा या बर्गर जैसे उदाहरण दें और अंत में घर के ताजे भोजन का व्यावहारिक विकल्प सुझाएँ।

4(ii). निम्नलिखित दिए गए विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग 120 शब्दों में रचनात्मक लेख लिखिए :

महानगरों का बढ़ता आकर्षण [6 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रचनात्मक लेख किसी सामाजिक प्रवृत्ति को अनुभव, उदाहरण और विचार के सहारे स्पष्ट करता है। इस विषय में महानगरों की सुविधाएँ, लोगों की आकांक्षाएँ और शहरी जीवन की चुनौतियाँ मुख्य बिंदु हैं।
- लेख को लगभग 120 शब्दों में रखते हुए आकर्षक आरंभ, संतुलित विवेचन और समाधानपूर्ण अंत दें। महानगरों के आकर्षण का कारण बताएँ और अवसरों के साथ जीवन की कठिनाइयों का भी उल्लेख करें।

चरण 1: प्रारूप और विषयवस्तु की योजना प्रारंभ में महानगर को सपनों और अवसरों के केंद्र के रूप में प्रस्तुत करें। आगे शिक्षा, रोजगार, चिकित्सा और आधुनिक सुविधाओं को आकर्षण के कारण बताएँ। फिर महँगाई, प्रदूषण और अकेलेपन पर ध्यान दिलाते हुए छोटे नगरों के विकास का सुझाव दें। शीर्षक संक्षिप्त और सीधे विषय से जुड़ा रखें। विचारों के बीच कारण और परिणाम का संबंध स्पष्ट हो। रचनात्मक लेख में पत्र की तरह पता, संबोधन या हस्ताक्षर देने की आवश्यकता नहीं है। भाषा सहज रखें और अनावश्यक दोहराव से बचें।

चरण 2: पूर्ण नमूना रचनात्मक लेख महानगरों का बढ़ता आकर्षण

ऊँची इमारतें, जगमगाती सड़कें और अनगिनत अवसर महानगरों को सपनों का पता बना देते हैं। गाँवों और छोटे नगरों से अनेक लोग बेहतर भविष्य की तलाश में यहाँ आते हैं। अच्छी शिक्षा, रोजगार, आधुनिक चिकित्सा और परिवहन की सुविधाएँ उन्हें आकर्षित करती हैं। युवाओं को लगता है कि उनकी प्रतिभा को पहचान यहीं मिलेगी। किंतु चमक के पीछे कठिनाइयाँ भी हैं। महँगा आवास, यातायात की भीड़, प्रदूषण और समय का अभाव जीवन को थका देते हैं। भीड़ में भी व्यक्ति अकेलापन अनुभव कर सकता है। महानगर अवसर अवश्य देते हैं, पर सफलता के लिए कौशल और धैर्य जरूरी हैं। यदि छोटे नगरों और गाँवों में शिक्षा, स्वास्थ्य तथा रोजगार विकसित हों, तो पलायन का दबाव घटेगा। विकास का प्रकाश हर क्षेत्र तक पहुँचना चाहिए।

चरण 3: निष्कर्ष लेख महानगरों के बढ़ते आकर्षण को सुविधाओं और अवसरों से जोड़ते हुए उनकी कठिनाइयों तथा संतुलित क्षेत्रीय विकास की आवश्यकता स्पष्ट करता है।

त्वरित सुझाव: महानगरों पर लेख में रोजगार और शिक्षा के आकर्षण के बाद महँगी जीवनचर्या का उदाहरण दें तथा छोटे नगरों के विकास से समापन करें।

4(iii). निम्नलिखित दिए गए विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग 120 शब्दों में रचनात्मक लेख लिखिए :

बाज़ारों का बदलता स्वरूप [6 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रचनात्मक लेख में विषय से जुड़ा अनुभव, कल्पना और विचार सहज भाषा में प्रस्तुत किए जाते हैं। बाज़ार के बदलते स्वरूप को पुराने और नए खरीदारी अनुभवों से स्पष्ट किया जा सकता है।
- लगभग 120 शब्दों के लेख में आकर्षक शीर्षक, विषय का संक्षिप्त परिचय, परिवर्तन के ठोस उदाहरण तथा सार्थक समापन होना चाहिए।

चरण 1: विषय और प्रस्तुति की योजना लेख का आरंभ पुराने बाज़ार के परिचित दृश्य से करें। फिर मॉल और ऑनलाइन खरीदारी से आए परिवर्तन बताएँ। सुविधा के साथ स्थानीय दुकानदारों और मानवीय संबंधों पर पड़ने वाले प्रभाव को भी स्थान दें। इससे लेख केवल वस्तुओं की सूची न बनकर बदलती जीवनशैली का चित्र बनेगा। भाषा में गंध, आवाज़ और दृश्य जैसे बिंब रखें, ताकि पाठक बाज़ार की हलचल अनुभव कर सके। समापन में आधुनिकता को स्वीकार करते हुए आत्मीयता और छोटे व्यापारियों की आवश्यकता रेखांकित करें।

चरण 2: लगभग 120 शब्दों में मॉडल रचनात्मक लेख **बाज़ारों का बदलता स्वरूप**

कभी बाज़ार जाने का अर्थ था कपड़े का थैला लेकर परिचित दुकानदारों से मिलना। गलियों में मसालों की खुशबू, ग्राहकों की आवाज़ें और मोलभाव की चहलपहल रहती थी। अब चमकते मॉल और मोबाइल की छोटी स्क्रीन ने खरीदारी का ढंग बदल दिया है। घर बैठे सामान चुनना, कीमतों की तुलना करना और डिजिटल भुगतान करना आसान हो गया है। त्योहारों की भीड़ अब ऑनलाइन छूट की होड़ में भी दिखाई देती है। इस सुविधा के बीच स्थानीय दुकानदारों की चिंता और आत्मीय संबंधों का कम होना भी सच है। नए बाज़ार समय बचाते हैं, पर पुरानी दुकानों का भरोसा अनमोल है। बदलाव तभी सुंदर होगा, जब तकनीक की सुविधा के साथ छोटे व्यापारियों और मानवीय जुड़ाव को भी जगह मिलेगी।

चरण 3: निष्कर्ष लेख में पारंपरिक बाज़ार से डिजिटल खरीदारी तक के परिवर्तन को दृश्यात्मक ढंग से प्रस्तुत करते हुए सुविधा, स्थानीय व्यापार और मानवीय संबंधों के बीच संतुलन का संदेश दिया गया है।

त्वरित सुझाव: ऐसे विषय पर पहले एक परिचित दृश्य सोचें, फिर बदलाव के दो ठोस उदाहरण और अंत में उससे जुड़ी अपनी संतुलित टिप्पणी लिखें।

5(i). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 80 शब्दों में लिखिए :

'अप्रत्याशित विषयों पर लिखने से लेखन पर पकड़ मजबूत होती है।' – कैसे ? स्पष्ट कीजिए। [4 अंक]

हल:

अवधारणा:

- अप्रत्याशित विषयों पर लेखन लेखक की स्वतंत्र सोच, कल्पना, अनुभव और अभिव्यक्ति का अभ्यास है। इसमें पहले से रटी सामग्री के स्थान पर विषय के अनुसार विचार विकसित करने पड़ते हैं।
- लेखन पर पकड़ का अर्थ उचित शब्द चुनना, विचारों को क्रम देना और उन्हें स्पष्ट तथा प्रभावशाली भाषा में व्यक्त कर पाना है।

चरण 1: कथन के समर्थन में तर्क पहचानना प्रश्न पूछता है कि अप्रत्याशित विषयों पर लिखने का अभ्यास लेखन-कौशल को कैसे विकसित करता है। उत्तर में कल्पनाशक्ति, मौलिक चिंतन, अनुभवों के उपयोग, विचारों के संयोजन और भाषा के अभ्यास को आपस में जोड़ना चाहिए। केवल यह कहना पर्याप्त नहीं कि लिखने से अभ्यास होता है; यह भी बताना है कि अभ्यास में कौन-कौन सी क्षमताएँ विकसित होती हैं। उत्तर को विषय से जोड़कर रखें और किसी एक लाभ को बार-बार दोहराने के स्थान पर अलग-अलग क्षमताओं का स्पष्ट संबंध बताएँ।

चरण 2: लगभग 80 शब्दों में उत्तर अप्रत्याशित विषयों पर लिखते समय लेखक तैयार सामग्री पर निर्भर नहीं रहता। वह अपने अनुभवों, स्मृतियों और कल्पना से विषय के नए पक्ष खोजता है। इससे मौलिक चिंतन तथा सूक्ष्म निरीक्षण की क्षमता बढ़ती है। विचारों को क्रमबद्ध करने, उपयुक्त शब्द चुनने और रोचक शैली में प्रस्तुत करने का अभ्यास होता है। विषय के अनुसार भाषा ढालने से अभिव्यक्ति में सहजता तथा लचीलापन आता है। नियमित अभ्यास संकोच दूर करके आत्मविश्वास बढ़ाता है। इस प्रकार लेखक की लेखन पर पकड़ मजबूत होती है।

चरण 3: निष्कर्ष अप्रत्याशित विषयों का अभ्यास सोचने और अभिव्यक्त करने की स्वतंत्र क्षमता विकसित करता है; इसी से भाषा, शैली और विचारों के संगठन पर लेखक का नियंत्रण बढ़ता है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में हर लाभ को लेखन की किसी क्षमता से जोड़ें: कल्पना से मौलिकता, क्रम से स्पष्टता और शब्द-चयन से प्रभावशीलता आती है।

5(ii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 80 शब्दों में लिखिए :

कहानी के पात्रों के नाट्य रूपांतरण में किन बातों का ध्यान रखना चाहिए ? स्पष्ट कीजिए। [4 अंक]

हल:

अवधारणा:

- नाट्य रूपांतरण में कहानी के वर्णन को मंच पर पात्रों के अभिनय, संवाद और क्रिया से व्यक्त किया जाता है।
- पात्रों का चयन कथानक में उनकी भूमिका, मूल स्वभाव और मंच की व्यावहारिक आवश्यकताओं के अनुसार होता है।

चरण 1: पात्रों की पहचान और मंचीय प्रस्तुति पहले मुख्य और गौण पात्रों की भूमिका पहचाननी चाहिए। पात्रों की आयु, सामाजिक परिवेश, संबंध और मूल व्यक्तित्व का ध्यान रखना आवश्यक है। कहानी में कथावाचक जिन भावों या विचारों का वर्णन करता है, नाटक में वे पात्रों के संवाद, हाव-भाव और क्रियाओं से प्रकट होते हैं। इसलिए संवाद पात्रानुकूल हों और उनके बोलने के ढंग में स्वाभाविक अंतर दिखाई दे। रूपांतरण करते समय हर पात्र की आवश्यकता भी परखनी चाहिए। जो भूमिका कथानक को आगे बढ़ाती है या संघर्ष स्पष्ट करती है, उसे पर्याप्त अवसर मिले। कथावाचक की लंबी व्याख्या को ज्यों का त्यों संवाद बना देना नाटकीयता कम करता है। उसके स्थान पर प्रसंगानुकूल क्रिया तथा छोटे, प्रभावी संवाद रखे जाते हैं।

चरण 2: लगभग 80 शब्दों में उत्तर कहानी के पात्रों का नाट्य रूपांतरण करते समय उनके मूल स्वभाव, आयु, सामाजिक परिवेश और आपसी संबंधों को सुरक्षित रखना चाहिए। संवाद उनकी शिक्षा, स्थिति और मनोदशा के अनुकूल हों। कथावाचक द्वारा बताए गए भावों तथा अंतर्द्वंद्वों को अभिनय, हाव-भाव, क्रिया और संवाद से व्यक्त करना चाहिए। अनावश्यक पात्र घटाए जा सकते हैं, किंतु कथानक और मूल संवेदना प्रभावित नहीं होने चाहिए। पात्रों की संख्या तथा उनकी गतिविधियाँ मंच की सीमाओं के अनुकूल हों, ताकि प्रस्तुति स्वाभाविक और प्रभावशाली बने।

चरण 3: निष्कर्ष इस प्रकार पात्रों की मूल पहचान बनाए रखते हुए उन्हें अभिनय और संवाद के माध्यम से मंच पर सजीव करना चाहिए।

त्वरित सुझाव: उत्तर में पात्रों का स्वभाव, पात्रानुकूल भाषा, अंतर्द्वंद्व की अभिव्यक्ति और मंच की सीमाएँ अवश्य जोड़ें।

5(iii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 80 शब्दों में लिखिए :

रेडियो नाटक के लिए कहानी का चयन करते समय किन महत्त्वपूर्ण बातों का ध्यान रखना आवश्यक है और क्यों ? [4 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रेडियो नाटक श्रव्य माध्यम है; श्रोता पात्रों और घटनाओं को संवाद, ध्वनि तथा संगीत के सहारे समझता है।
- कहानी चुनते समय श्रव्य प्रस्तुति की संभावना, कथानक की स्पष्टता और प्रसारण की समय-सीमा देखी जाती है।

चरण 1: श्रव्य माध्यम की आवश्यकताएँ रेडियो में दर्शक को दृश्य नहीं दिखाई देते। इसलिए ऐसी कहानी उपयुक्त है जिसमें घटना, वातावरण और पात्रों के भाव संवाद तथा ध्वनि से स्पष्ट किए जा सकें। बहुत अधिक पात्रों या उलझी घटनाओं से आवाजों की पहचान और कथानक समझने में कठिनाई होती है। दृश्य-सौंदर्य अथवा मूक अभिनय पर पूरी तरह निर्भर कहानी को प्रभावी श्रव्य रूप देना कठिन हो सकता है। कहानी में संवादों द्वारा घटनाओं को आगे बढ़ाने का अवसर होना चाहिए। ध्वनि-प्रभाव केवल सजावट न होकर स्थान, समय और गतिविधि की पहचान कराने में सहायक हों। प्रसारण की अवधि में कहानी का आरंभ, विकास और अंत स्पष्ट रूप से आ सके। तभी श्रोता बिना दृश्य सहायता के कथा में रुचि बनाए रख पाएगा।

चरण 2: लगभग 80 शब्दों में उत्तर रेडियो नाटक के लिए ऐसी कहानी चुननी चाहिए जिसका कथानक सरल, रोचक और समय-सीमा के अनुकूल हो। पात्र सीमित हों तथा उनकी आवाजों और बोलने के ढंग से पहचान संभव हो। घटनाएँ, वातावरण और भाव संवाद, ध्वनि-प्रभाव तथा संगीत से व्यक्त किए जा सकें। केवल दृश्य-वर्णन या मूक अभिनय पर निर्भर कहानी का चयन कठिनाई पैदा करता है। कहानी में संघर्ष, उत्सुकता और प्रभावी संवाद की संभावना हो, क्योंकि रेडियो पर श्रोता केवल सुनकर घटनाओं की कल्पना करता है।

चरण 3: निष्कर्ष कहानी का चयन उसकी श्रव्य प्रस्तुति की क्षमता को ध्यान में रखकर करना चाहिए, ताकि श्रोता घटनाओं को सहजता से समझ सके।

त्वरित सुझाव: हर चयन-मानदंड का कारण रेडियो की श्रव्य प्रकृति से जोड़ें; संवाद, ध्वनि, सीमित पात्र और समय-सीमा याद रखें।

6(i). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए :

रोमांचित शरीर का संगीत बच्चों को किस प्रकार जीवन तरंग से जोड़ता है ? 'पतंग' कविता के संदर्भ में स्पष्ट कीजिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- आलोक धन्वा की कविता में पतंग उड़ाते बच्चों की उमंग, गति और निर्भयता जीवन के प्रति उत्साह को प्रकट करती हैं।
- रोमांचित शरीर का संगीत बच्चों की शारीरिक स्फूर्ति और मन के उल्लास का संयुक्त बिंब है।

चरण 1: भाव समझिए पतंग के साथ बच्चों का पूरा शरीर गतिशील होता है। उनकी दौड़, उड़ान को देखती आँखें तथा ऊँचाई छूने की इच्छा उनके आनंद को व्यक्त करती हैं। यहाँ संगीत का आशय किसी वाद्य की धुन से नहीं, उनके शरीर की उत्साहपूर्ण लय से है। इस आनंद में शरीर और मन अलग नहीं रहते; बाहरी गति आंतरिक उत्साह का रूप बन जाती है। इसीलिए कवि इसे जीवन से जुड़ाव की अनुभूति कहता है।

चरण 2: लगभग 40 शब्दों में उत्तर पतंग उड़ाते बच्चों का रोमांचित शरीर उमंग और स्फूर्ति से भर उठता है। दौड़ना, उछलना तथा आकाश की ऊँचाइयों को छूने की चाह उन्हें जीवन की गतिशीलता से जोड़ती है। उनका उल्लास भय को दूर कर जीवन के प्रति निर्भय उत्साह जगाता है।

चरण 3: निष्कर्ष बच्चों की स्फूर्ति और उल्लास की लय ही उन्हें जीवन की तरंग से जोड़ती है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में शारीरिक गति को मानसिक उल्लास और निर्भय जीवनोत्साह से अवश्य जोड़ें।

6(ii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए :

'विप्लव-रव से छोटे ही हैं शोभा पाते' पंक्ति का आशय 'बादल राग' कविता के आधार पर स्पष्ट कीजिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- निराला के यहाँ बादल क्रांति का प्रतीक है और छोटे पौधे शोषित सामान्य जन का संकेत देते हैं।
- विप्लव का परिवर्तन शोषण से पीड़ित जन के लिए नवजीवन और उन्नति की संभावना लाता है।

चरण 1: प्रतीक और विरोध समझिए क्रांति की गर्जना से बड़े वृक्षों के रूप में चित्रित शक्तिशाली वर्ग विचलित होते हैं। इसके विपरीत छोटे पौधे लहलहाते हैं। यह अंतर बताता है कि परिवर्तन से विशेषाधिकार रखने वाले डरते हैं, जबकि वंचित लोगों को उससे आशा मिलती है। कविता में यह विरोध क्रांति के सामाजिक पक्ष को स्पष्ट करता है। जो वर्ग पहले दबा हुआ था, वही परिवर्तन से अपने अधिकार और सम्मान पाने की आशा रखता है।

चरण 2: लगभग 40 शब्दों में उत्तर इस पंक्ति में छोटे पौधे शोषित और उपेक्षित सामान्य जन के प्रतीक हैं। क्रांति की गर्जना से शक्तिशाली शोषक भयभीत होते हैं, किंतु छोटे लोगों में आशा और उत्साह जागते हैं। क्रांति उन्हें शोषण से मुक्ति तथा विकास के अवसर देती है।

चरण 3: निष्कर्ष विप्लव से छोटे अर्थात शोषित जन का जीवन सँवरता है और उनकी गरिमा बढ़ती है।

त्वरित सुझाव: छोटे पौधों का अर्थ केवल आकार से न लें; उन्हें सामान्य शोषित जन के प्रतीक के रूप में समझाएँ।

6(iii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए :

'बात सीधी थी पर' कविता के संदर्भ में लिखिए कि बात शरारती बच्चे की तरह किस प्रकार लेखक से खेल रही थी ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कुँवर नारायण की कविता सहज कथ्य और उसे अनावश्यक रूप से जटिल बना देने वाली भाषा के संबंध को समझाती है।
- शरारती बच्चे की उपमा बात की सहज चंचलता और कवि की प्रयासजनित उलझन को व्यक्त करती है।

चरण 1: प्रसंग का अर्थ समझिए कवि अपनी सीधी बात को प्रभावशाली बनाने के लिए भाषा को उलटता-पलटता और पेचीदा बनाता जाता है। इससे बात की सहजता खो जाती है। उसकी पकड़ से छूटती हुई बात मानो चंचल बच्चे की तरह उसे छकाती रहती है। बात की सफलता उसकी सहजता में थी, लेकिन कवि ने शब्दों के आडंबर को अधिक महत्व दिया। इस प्रसंग से सहज अभिव्यक्ति का मूल्य सामने आता है और भाषा के प्रति सजग रहने की सीख मिलती है।

चरण 2: लगभग 40 शब्दों में उत्तर कवि सीधी बात को भाषा के फेर में उलझाकर प्रभावशाली बनाना चाहता था। बात उसकी पकड़ में आने के स्थान पर शरारती बच्चे की तरह उसे छकाती रही। कवि जितना शब्दों में उलझा, बात उतनी ही सहज अभिव्यक्ति से दूर होती गई।

चरण 3: निष्कर्ष भाषा के अनावश्यक फेर में उलझी बात कवि की पकड़ से छूटकर उसे छकाती रही।

त्वरित सुझाव: बच्चे की शरारत का संबंध बात के पकड़ में न आने से जोड़ें और भाषा की उलझन का कारण लिखें।

---

7. भोर का नभ
राख से लीपा हुआ चौका
(अभी गीला पड़ा है)
बहुत काली सिल ज़रा से लाल केसर से
कि जैसे धुल गई हो
स्लेट पर या लाल खड़िया चाक
मल दी हो किसी ने
नील जल में या किसी की
गौर झिलमिल देह
जैसे हिल रही हो। [5 अंक]

7(i). काव्यांश में 'काली सिल' उपमान किसके लिए प्रयुक्त किया गया है ? [1 अंक]

(A) अंधकार से युक्त प्रकृति
(B) अँधेरे से युक्त आसमान
(C) अंधकार से युक्त पृथ्वी
(D) रात्रि का अंधकार

सही उत्तर: (B) अँधेरे से युक्त आसमान

हल:

अवधारणा:

- उपमान वह परिचित वस्तु है जिसके सहारे कवि वर्णित दृश्य की समानता स्पष्ट करता है।
- काव्यांश का आरंभ भोर के नभ से होता है; आगे के रंगीन बिंब उसी आकाश के बदलते रूप को दिखाते हैं।

चरण 1: संदर्भ से उपमेय पहचानिए बहुत काली सिल पर थोड़ा लाल केसर होने का दृश्य अँधेरे आकाश में फैलती भोर की लालिमा को मूर्त करता है। अतः काली सिल उस आकाश का उपमान है जिसमें रात का अँधेरा अभी शेष है।

चरण 2: अन्य विकल्प जाँचिए (A) पूरी प्रकृति तक अर्थ फैला देता है, जबकि वर्णन नभ का है। (C) पृथ्वी का उल्लेख नहीं है। (D) केवल रात्रि के अंधकार को बताता है, आकाशरूपी उपमेय को नहीं। इसलिए (B) सबसे सटीक है।

चरण 3: निष्कर्ष सही विकल्प (B) है — अँधेरे से युक्त आसमान।

त्वरित सुझाव: आरंभ की पंक्ति में मुख्य वर्णित वस्तु खोजें; आगे आने वाले उपमान उसी से जोड़ें।

7(ii). 'बहुत काली सिल जरा से लाल केसर से' – पंक्ति का सही अर्थ है – [1 अंक]

(A) भोर का आकाश लालिमा से युक्त है।

(B) भोर का आकाश काला है।

(C) भोर में केसर को धोया गया है।

(D) भोर में काली सिल को धोया गया है।

सही उत्तर: (A) भोर का आकाश लालिमा से युक्त है।

हल:

अवधारणा:

- भोर के समय रात्रि के अँधेरे के बीच सूर्य की प्रारंभिक लालिमा दिखाई देने लगती है।
- काली सिल और लाल केसर का बिंब रंगों की इसी स्थिति को दृश्य रूप देता है।

चरण 1: बिंब का भावार्थ निकालिए काली सिल अँधेरा लिए आकाश है और उस पर थोड़ा लाल केसर उषा की हलकी लालिमा है। दोनों रंग साथ उपस्थित हैं, इसलिए पंक्ति केवल कालापन नहीं, उसके भीतर उभरते लाल रंग का संकेत देती है।

चरण 2: विकल्पों का परीक्षण कीजिए (A) भोर के आकाश की लालिमा को सही पकड़ता है। (B) लाल केसर के संकेत की उपेक्षा करता है। (C) और (D) उपमान को वास्तविक घटना मान लेते हैं; कवि न केसर धोने की घटना बता रहा है, न सिल धोने की।

चरण 3: निष्कर्ष सही विकल्प (A) है — भोर का आकाश लालिमा से युक्त है।

त्वरित सुझाव: काव्य में वस्तुओं के नामों को वास्तविक क्रिया मानने से पहले उनके रंग और संकेत देखें।

7(iii). इस काव्यांश में कवि ने उषा का कौन-सा चित्र प्रस्तुत किया है ? [1 अंक]

(A) छायाचित्र

(B) रेखाचित्र

(C) शब्दचित्र

(D) भित्तिचित्र

सही उत्तर: (C) शब्दचित्र

हल:

अवधारणा:

- कविता में शब्दों के माध्यम से ऐसा दृश्य रचना जिसे पाठक मन में देख सके, शब्दचित्र कहलाता है।
- इस काव्यांश में घरेलू वस्तुओं और रंगों के बिंब उषा के रूप को सजीव करते हैं।

चरण 1: चित्रण का माध्यम पहचानिए राख से लीपा चौका, काली सिल, लाल केसर और नील जल जैसे शब्द पाठक के सामने भोर का रंग बदलता आकाश उपस्थित करते हैं। यहाँ चित्र बनाने का माध्यम भाषा है।

चरण 2: दूसरे माध्यमों से भेद कीजिए (A) छायाचित्र कैमरे से बनता है। (B) रेखाचित्र रेखाओं से बनता है। (D) भित्तिचित्र दीवार पर अंकित होता है। प्रस्तुत अंश में कवि ने शब्दों से दृश्य उभारा है, इसलिए (C) उचित है।

चरण 3: निष्कर्ष सही विकल्प (C) है — शब्दचित्र।

त्वरित सुझाव: चित्र का माध्यम पहचानें: कविता की भाषा से बना दृश्य शब्दचित्र कहलाता है।

7(iv). कवि द्वारा भोर को 'राख से लीपा हुआ चौका' कहना प्रतिपादित करता है कि भोर का नभ : [1 अंक]

(A) अपनी आभा से चमत्कृत कर रहा है।

(B) प्राकृतिक सुंदरता को बढ़ा रहा है।

(C) सफेद व नीले वर्णों का अद्भुत मिश्रण है।

(D) नए परिवर्तनों व आयामों का प्रतीक है।

सही उत्तर: (C) सफेद व नीले वर्णों का अद्भुत मिश्रण है।

हल:

अवधारणा:

- राख का धूसर-सफेद रंग तथा आकाश का नीलापन मिलकर प्रातःकालीन नभ की विशेष आभा बनाते हैं।
- गीले चौके का बिंब भोर के आकाश की ताजगी, हलकी नमी और रंगों की कोमलता को मूर्त करता है।

चरण 1: रंगों का संकेत समझिए राख से लीपा हुआ चौका उजले-धूसर रंग का होता है। कवि इसे भोर के नभ का उपमान बनाकर नील आकाश में फैली सफेदी को दिखाता है। अभी गीला पड़ा होने का संकेत इस रंग-बिंब को अधिक ताजा और सजीव बनाता है।

चरण 2: विकल्पों की सटीकता परखिए (A) चमत्कृत करने और (B) सुंदरता बढ़ाने के सामान्य प्रभाव बताते हैं, पर इस उपमान के विशिष्ट रंग-संयोजन को नहीं पकड़ते। (D) परिवर्तन का व्यापक प्रतीकात्मक अर्थ जोड़ता है। (C) सफेद और नीले वर्णों के मिश्रण को सीधे स्पष्ट करता है।

चरण 3: निष्कर्ष सही विकल्प (C) है — सफेद व नीले वर्णों का अद्भुत मिश्रण है।

त्वरित सुझाव: राख से जुड़े सफेद-धूसर रंग को नभ के नीले रंग से मिलाकर उपमान का अर्थ चुनें।

7(v). 'नील जल में या किसी की गौर झिलमिल देह' – का वर्णन किस अनुभूति से संबंधित है ? [1 अंक]

(A) निर्मलता और उज्ज्वलता

(B) कृत्रिमता और पवित्रता

(C) कोमलता और सुंदरता

(D) विस्मय और रहस्य

सही उत्तर: (A) निर्मलता और उज्ज्वलता

हल:

अवधारणा:

- काव्य-बिंब का भाव उसके विशेषणों और दृश्य-संकेतों से पहचानना चाहिए।

- नीले जल में झिलमिलाती गौर देह का बिंब भोर के आकाश की स्वच्छ, उजली आभा को मूर्त करता है।

चरण 1: निर्णायक शब्दों का अर्थ यहाँ नील जल के साथ गौर और झिलमिल शब्द आए हैं। गौर उजलेपन को और झिलमिल प्रकाश की चमक को व्यक्त करता है। नीले परिवेश में उभरती उजली आभा से भोर की निर्मलता और उज्ज्वलता की अनुभूति होती है।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच (B) में कृत्रिमता अनुपयुक्त है, क्योंकि दृश्य सहज प्राकृतिक है। (C) की कोमलता और सुंदरता सामान्य प्रभाव हो सकते हैं, किंतु गौर तथा झिलमिल के विशिष्ट अर्थ को (A) अधिक ठीक पकड़ता है। (D) में विस्मय और रहस्य इस पंक्ति के उजले दृश्य का प्रमुख भाव नहीं हैं।

चरण 3: निष्कर्ष अतः सही विकल्प (A) निर्मलता और उज्ज्वलता है।

त्वरित सुझाव: गौर और झिलमिल को क्रमशः उजले रंग और चमक से जोड़कर विकल्प चुनें।

8(i). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में लिखिए :

"सब घर एक कर देना" – पंक्ति का बच्चों और कविता के संदर्भ में क्या औचित्य है ? 'कविता के बहाने' कविता के आधार पर लिखिए।

[3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कुँवर नारायण की कविता में बच्चों का खेल कविता की निर्बंध रचनात्मकता का उपमान है।
- सब घर एक कर देना स्थान, अपनत्व और सामाजिक भेद की सीमाएँ मिटाने का संकेत है।

चरण 1: बच्चों और कविता के बीच समानता बच्चे खेलते समय अपने और पराए घर का संकीर्ण भेद भूल जाते हैं। उनका सहज अपनापन खेल का संसार व्यापक बनाता है। इसी तरह कविता अनुभव, कल्पना और संवेदना के सहारे विभिन्न व्यक्तियों को जोड़ती है। यहाँ घरों को वास्तव में तोड़ना या मिलाना अभिप्रेत नहीं है; भावनात्मक और मानवीय एकता की बात है।

चरण 2: उत्तर की रूपरेखा उत्तर में पहले बच्चों की भेदरहित खेल-वृत्ति बतानी चाहिए, फिर कविता की व्यापकता से उसका संबंध जोड़ना चाहिए। दोनों के लिए कोई निश्चित सीमा अंतिम नहीं होती। इस समानता से पंक्ति का औचित्य सिद्ध होता है। केवल बच्चों के खेल का वर्णन करने से कविता का आशय अधूरा रह जाएगा।

चरण 3: लगभग 60 शब्दों में मॉडल उत्तर बच्चे खेलते समय अपने-पराए तथा छोटे-बड़े का भेद भूलकर सभी घरों को अपने खेल का हिस्सा बना लेते हैं। कविता भी देश, भाषा, वर्ग और समय की सीमाओं को पार करके मनुष्यों को संवेदना के स्तर पर जोड़ती है। इसलिए सब घर एक कर देना बच्चों के सहज अपनत्व और कविता की असीम, भेदमुक्त रचनात्मक दुनिया का सार्थक संकेत है।

चरण 4: निष्कर्ष यह पंक्ति बच्चों के खेल और कविता, दोनों की सीमाओं से मुक्त, सबको जोड़ने वाली प्रकृति को स्पष्ट करती है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में बच्चों का सहज अपनापन और कविता की मानवीय एकता, दोनों को जोड़ें।

8(ii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में लिखिए :

'कैमरे में बंद अपाहिज' कविता को आप करुणा की कविता मानते हैं या क्रूरता की ? तर्क सहित उत्तर लिखिए। [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रघुवीर सहाय की कविता करुणा के प्रदर्शन के पीछे छिपी क्रूरता पर व्यंग्य करती है।
- पीड़ित व्यक्ति की गरिमा और कार्यक्रम बनाने वाले की दृष्टि में अंतर पहचानना आवश्यक है।

चरण 1: कविता में क्रूरता का आधार साक्षात्कारकर्ता दिव्यांग व्यक्ति से उसकी पीड़ा बार-बार कहलवाना चाहता है। वह ऐसे प्रश्न करता

है जिनसे सामने वाला असहज हो और उसका दुःख कैमरे में अधिक प्रभावशाली दिखाई दे। सहायता या आत्मीय संवाद के स्थान पर दुःख का प्रदर्शन कार्यक्रम का लक्ष्य बन जाता है। यही संवेदनहीनता कविता के व्यंग्य का केंद्र है।

चरण 2: करुणा और उसके प्रदर्शन का अंतर कवि पाठक में करुणा जगा सकता है, लेकिन दिखाए गए कार्यक्रम का व्यवहार करुणापूर्ण नहीं है। वास्तविक करुणा पीड़ित को सम्मान और सहारा देती है; यहाँ उसकी विवशता दर्शकों पर प्रभाव डालने का साधन बनती है। अतः उत्तर में क्रूरता का पक्ष चुनते हुए यह अंतर स्पष्ट करना चाहिए, जिससे कवि को स्वयं क्रूर समझने की भूल न हो।

चरण 3: लगभग 60 शब्दों में मॉडल उत्तर यह कविता करुणा के नाम पर की जाने वाली क्रूरता को उजागर करती है। कार्यक्रम संचालक दिव्यांग व्यक्ति की पीड़ा समझने के बजाय उसे बार-बार दुःख व्यक्त करने और रोने के लिए उकसाता है। उसकी विवशता दर्शकों की भावुकता जगाने का साधन बनती है। कवि इस संवेदनहीन व्यवहार पर व्यंग्य करके सच्ची करुणा तथा मानवीय गरिमा की आवश्यकता सामने लाते हैं।

चरण 4: निष्कर्ष चित्रित व्यवहार क्रूरता का है; कवि उसका विरोध करके पाठक में संवेदनशीलता जगाते हैं।

त्वरित सुझाव: कवि की सहानुभूति और कैमरे के सामने कराए जा रहे क्रूर प्रदर्शन में अंतर स्पष्ट करें।

8(iii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में लिखिए :

'तुलसीदास का युग बेरोज़गारी से त्रस्त था' – 'कवितावली' के संदर्भ में इस कथन को सिद्ध कीजिए। [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- तुलसीदास की कवितावली तत्कालीन समाज में जीविका के साधनों के नष्ट होने का यथार्थ प्रस्तुत करती है।
- किसान, व्यापारी, भिखारी और सेवक के उदाहरण संकट की व्यापकता प्रमाणित करते हैं।

चरण 1: पाठ के प्रमाण पहचानना कवि किसान को खेती, भिखारी को भीख, व्यापारी को व्यापार और सेवक को नौकरी से वंचित बताते हैं। अलग-अलग व्यवसायों के उदाहरण दिखाते हैं कि यह किसी एक व्यक्ति की विपत्ति नहीं थी। काम और आय के अभाव में समाज के अनेक वर्ग असहाय हो गए थे। सेवक को चाकरी न मिलने का वर्णन बेरोज़गारी का प्रत्यक्ष प्रमाण है।

चरण 2: जीविकाहीनता का सामाजिक प्रभाव आजीविका का साधन न मिलने से लोग चिंतित होकर एक-दूसरे से पूछते हैं कि कहाँ जाएँ और क्या करें। पेट की आग बुझाने के लिए मानवीय विवशता चरम तक पहुँचती है। अतः कथन की पुष्टि केवल गरीबी कह देने से नहीं, बल्कि काम के अवसरों के अभाव तथा उससे उत्पन्न निराशा को जोड़कर होती है।

चरण 3: लगभग 60 शब्दों में मॉडल उत्तर कवितावली में तुलसीदास बताते हैं कि किसान को खेती, भिखारी को भीख, व्यापारी को व्यापार और सेवक को चाकरी नहीं मिलती। जीविका के साधन छिनने से लोग चिंतित हैं और एक-दूसरे से पूछते हैं कि कहाँ जाएँ, क्या करें। पेट की आग ने समाज को व्याकुल कर दिया है। विभिन्न व्यवसायों की यह दुर्दशा तत्कालीन व्यापक बेरोज़गारी को सिद्ध करती है।

चरण 4: निष्कर्ष आजीविका के साधनों का अभाव और उससे उपजी सामूहिक व्याकुलता तुलसीदास के युग की बेरोज़गारी प्रमाणित करते हैं।

त्वरित सुझाव: किसान, व्यापारी और सेवक की आजीविका के ठोस उदाहरण देकर कथन सिद्ध करें।

9(i). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में लिखिए :

"भक्तिन का जीवन संघर्ष एवं कर्मठता का जीवंत उदाहरण है।" – भक्तिन के जीवन की विभिन्न स्थितियों का वर्णन करते हुए इस कथन की पुष्टि कीजिए। [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- चरित्र-चित्रण में जीवन की घटनाओं से संघर्ष और कर्मठता को प्रमाणित किया जाता है।
- भक्तिन विपत्तियों में आत्मसम्मान बनाए रखती है और श्रम को आजीविका का आधार बनाती है।

चरण 1: जीवन के संघर्ष पहचानिए बचपन में माँ की मृत्यु और विमाता का व्यवहार, अल्पायु में विवाह तथा ससुराल में उपेक्षा भक्तिन के संघर्षों की पृष्ठभूमि हैं। बेटियाँ होने के कारण उसे परिवार का तिरस्कार सहना पड़ा। पति की मृत्यु के बाद भी उसने दूसरा विवाह करने के दबाव के सामने झुकने के बजाय अपना घर सँभाला।

चरण 2: कर्मठता का प्रमाण दीजिए उसने खेती-बाड़ी और पशुपालन का काम परिश्रम से किया। परिवार की जिम्मेदारियाँ और आर्थिक कठिनाइयाँ बढ़ने पर वह शहर में सेवा करने आई। महादेवी के घर में भी अपने ढंग से जिम्मेदारी निभाने की उसकी तत्परता दिखाई देती है। वह परिस्थितियों को बदलने के लिए लगातार प्रयत्न करती है और जिम्मेदारियों से पीछे नहीं हटती। ये घटनाएँ बताती हैं कि वह दया पर निर्भर रहने के बजाय काम करके जीना चाहती है।

चरण 3: निष्कर्ष भक्तिन का बचपन मातृवियोग और उपेक्षा में बीता। ससुराल में बेटियाँ होने पर तिरस्कार मिला। पति की मृत्यु, बेटी के वैधव्य और आर्थिक संकटों ने उसका जीवन कठिन बनाया। फिर भी वह खेती-पशुपालन करती रही। लगान न चुका पाने पर अपमान सहकर शहर आई और सेवा से आजीविका कमाई। विपत्तियों में श्रम तथा स्वाभिमान न छोड़ना उसकी संघर्षशील कर्मठता का प्रमाण है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में केवल दुख न गिनाएँ; प्रत्येक कठिनाई के साथ भक्तिन के श्रम और स्वाभिमान का प्रमाण जोड़ें।

9(ii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में लिखिए :

'पानी का दान' क्या है ? 'काले मेघा पानी दे' पाठ के आधार पर लिखिए कि जीजी इसे किस प्रकार सही ठहराती हैं ? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- यह प्रश्न लोकविश्वास के पीछे जीजी के त्याग, दान और प्रतिफल संबंधी तर्क को समझने की जाँच करता है।
- पानी की कमी में भी थोड़ा पानी छोड़ना जीजी के लिए इंद्र से वर्षा माँगने का प्रतीक है।

चरण 1: पानी के दान का आशय समझिए अकाल और वर्षा के अभाव में इंदर सेना के लड़के पानी माँगते हैं। लोग उन पर पानी उड़ेलते हैं। इसी क्रिया को पानी का दान कहा गया है। लेखक को पानी की कमी के समय यह पानी की बरबादी लगती है; जीजी इसे आस्था और त्याग की दृष्टि से देखती हैं।

चरण 2: जीजी के तर्क स्पष्ट कीजिए जीजी कहती हैं कि जिस वस्तु की कमी हो, उसे छोड़ना ही सच्चा त्याग है। वे खेत का उदाहरण देती हैं: किसान अच्छी फसल पाने के लिए पहले कुछ बीज धरती में डालता है। इसी प्रकार थोड़ा पानी देना वर्षा के रूप में अधिक पानी पाने के लिए किया गया प्रतीकात्मक त्याग है। यह तुलना दान को निरर्थक खर्च नहीं, बड़े फल के लिए छोटा अंश छोड़ने की भावना के रूप में स्थापित करती है। उत्तर में इस लोकविश्वास को जीजी का विचार बताना चाहिए।

चरण 3: निष्कर्ष इंदर सेना के लड़कों पर पानी उड़ेलना ही 'पानी का दान' है। जीजी के अनुसार जिस वस्तु की कमी हो, उसका त्याग ही सच्चा दान होता है। किसान भी फसल पाने के लिए पहले बीज धरती में छोड़ता है। उसी तरह थोड़ा पानी देकर इंद्र से बहुत पानी माँगा जाता है। वे इसे वर्षा के लिए आस्था और त्याग मानती हैं।

त्वरित सुझाव: जीजी के तर्क को बीज बोने के उदाहरण से जोड़ें और इसे उन्हीं के लोकविश्वास के रूप में प्रस्तुत करें।

9(iii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में लिखिए :

'श्रम विभाजन और जाति-प्रथा' पाठ में आज के उद्योगों की सबसे बड़ी समस्या किसे और क्यों माना गया है ? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- यह प्रश्न श्रम के प्रति अरुचि और औद्योगिक कार्यकुशलता के संबंध को समझने पर केंद्रित है।
- जाति-प्रथा व्यक्ति की रुचि और योग्यता के स्थान पर जन्म से पेशा तय करती है।

चरण 1: समस्या का सही नाम बताइए लेख में उद्योगों की समस्या को केवल मशीनों या पूँजी की कमी तक सीमित नहीं किया गया है। बहुत से लोगों का निर्धारित कार्य में मन और ध्यान न लगना मूल समस्या है। जब व्यक्ति को काम पसंद नहीं होता, तो उससे पूरी लगन और कुशलता की अपेक्षा करना कठिन हो जाता है।

चरण 2: जाति-प्रथा से उसका संबंध समझिए जाति-प्रथा व्यक्ति को अपनी रुचि और क्षमता के अनुसार व्यवसाय चुनने की स्वतंत्रता नहीं देती। सामाजिक दबाव में वह अरुचिकर काम भी करता रहता है। इससे काम टालने की प्रवृत्ति, उदासीनता और अकुशलता बढ़ती है। व्यक्ति का काम से भावनात्मक जुड़ाव टूटने पर केवल अपने पेशे का परंपरागत वंशानुगत ज्ञान पर्याप्त नहीं रह जाता। इसलिए श्रम-विभाजन के साथ श्रमिक की स्वतंत्र पसंद और सम्मान का प्रश्न भी आवश्यक है।

चरण 3: निष्कर्ष आज के उद्योगों की सबसे बड़ी समस्या बहुत से लोगों का निर्धारित कार्य में मन और ध्यान न लगना है। जाति-प्रथा जन्म से पेशा निर्धारित करके व्यक्ति की रुचि और योग्यता की उपेक्षा करती है। विवश होकर अरुचिकर काम करने से उसमें काम टालने और कम काम करने की प्रवृत्ति आती है। फलतः कार्यकुशलता तथा उत्पादन प्रभावित होते हैं।

त्वरित सुझाव: समस्या लिखते समय बेरोजगारी मात्र न लिखें; अरुचिकर निर्धारित काम, उदासीनता और कार्यकुशलता का संबंध स्पष्ट करें।

10(i). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए :

'बाज़ार दर्शन' पाठ के आधार पर भगत जी के चरित्र की विशेषताओं का उल्लेख कीजिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- भगत जी का चरित्र संतोष, संयम और आवश्यकता की स्पष्ट पहचान को व्यक्त करता है।
- पाठ की घटनाओं से उनकी धन के प्रति अनासक्ति और बच्चों के प्रति उदारता का प्रमाण मिलता है।

चरण 1: व्यापार के व्यवहार से गुण पहचानिए भगत जी चूरन बेचते हैं और निश्चित कमाई हो जाने पर बचा चूरन बच्चों को मुफ्त बाँट देते हैं। अधिक लाभ के अवसर पर भी लालच न करना उनके संतोष और उदारता को दिखाता है।

चरण 2: बाज़ार के प्रति दृष्टि समझिए वे अपनी जरूरत जानते हैं, इसलिए बाज़ार की आकर्षक वस्तुएँ उन्हें अनावश्यक खरीद के लिए नहीं लुभातीं। उनका व्यवहार मन के संयम और आत्मविश्वास का परिचय देता है। उत्तर में गुणों के साथ पाठ का यह ठोस उदाहरण देना चाहिए।

चरण 3: निष्कर्ष भगत जी संतोषी, संयमी और उदार हैं। वे चूरन बेचकर छह आने कमा लेने पर बचा चूरन बच्चों को मुफ्त बाँट देते हैं। अपनी आवश्यकताएँ स्पष्ट होने से बाज़ार का आकर्षण उन्हें नहीं लुभाता। उनका सरल व्यवहार लोभ से मुक्त आत्मसंयम का परिचायक है।

त्वरित सुझाव: भगत जी के गुणों को छह आने की कमाई और बचा चूरन बाँटने की घटना से प्रमाणित करें।

10(ii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए :

'शिरीष के फूल' निबंध के आधार पर लिखिए कि पाठ में शिरीष के फूल की तुलना किससे और क्यों की गई है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- शिरीष के स्वभाव के माध्यम से विपरीत परिस्थितियों में भी जीवन के प्रति आस्था और मस्ती बनाए रखने का संदेश दिया गया है।
- अवधूत सांसारिक सुख-दुख से अनासक्त रहकर अपनी सहजता बनाए रखता है; यही गुण शिरीष की तुलना का आधार है।

चरण 1: तुलना का आधार लेखक शिरीष को कालजयी अवधूत के रूप में देखता है। जेठ की तपती धूप, लू और उमस में अन्य पौधे मुरझा जाते हैं, किंतु शिरीष कोमल फूलों से लदा रहता है। उसकी प्रसन्नता अनुकूल मौसम पर निर्भर नहीं है।

चरण 2: गुणों का संबंध अवधूत बाहरी उथल-पुथल से विचलित हुए बिना अनासक्त भाव से जीता है। वैसे ही शिरीष संकट सहकर भी सौंदर्य और सरसता बिखेरता है। कबीर में भी ऐसी ही बेपरवाही, मस्ती और सरसता थी; इसलिए लेखक उन्हें शिरीष के समान बताता है। तुलना अजेय जीवनी-शक्ति और निर्लिप्त मस्ती पर आधारित है।

चरण 3: निष्कर्ष शिरीष की तुलना कालजयी अवधूत से तथा मस्ती और सरसता के कारण कबीर से की गई है। वह धूप, लू और उमस में भी निर्लिप्त रहकर फूलता है। कबीर की भाँति उसमें बेपरवाही, फक्कड़पन और जीवन के प्रति सहज सरसता दिखाई देती है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में पहले कालजयी अवधूत का नाम लिखिए, फिर धूप-लू में भी खिले रहने को अनासक्ति से जोड़िए।

10(iii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए :

" 'दासता' केवल कानूनी पराधीनता को ही नहीं कहा जा सकता।" इस कथन के आधार पर स्पष्ट कीजिए कि डॉ. भीमराव आंबेडकर ने 'मेरी कल्पना का आदर्श समाज' में 'दासता' को किन व्यापक अर्थों में परिभाषित किया है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- आंबेडकर के लिए स्वतंत्रता का अर्थ अपनी योग्यता और इच्छा के अनुसार जीवन तथा व्यवसाय चुनने का वास्तविक अवसर है।
- सामाजिक विवशता से दूसरों का निर्धारित पेशा अपनाना भी दासता है, भले ही कानून व्यक्ति को स्वतंत्र घोषित करता हो।

चरण 1: दासता का व्यापक अर्थ दासता केवल किसी व्यक्ति का कानूनी रूप से दूसरे का गुलाम होना नहीं है। ऐसी सामाजिक व्यवस्था भी दासता उत्पन्न करती है जिसमें कुछ लोग दूसरों के जीवन और आचरण को नियंत्रित करें तथा उनके कार्य पहले से निर्धारित कर दें।

चरण 2: व्यवसाय की स्वतंत्रता से संबंध जाति-प्रथा व्यक्ति की रुचि और क्षमता की जगह जन्म के आधार पर उसका पेशा तय करती है। यदि किसी को अपना व्यवसाय चुनने की छूट न मिले और उसे समाज द्वारा थोपा गया काम करना पड़े, तो उसकी स्वतंत्रता वास्तविक नहीं है। इसीलिए आंबेडकर सामाजिक पराधीनता को भी दासता कहते हैं।

चरण 3: निष्कर्ष आंबेडकर के अनुसार दासता में कानूनी गुलामी के साथ सामाजिक पराधीनता भी शामिल है। जिस व्यवस्था में व्यक्ति को अपना व्यवसाय चुनने की स्वतंत्रता न मिले और दूसरों द्वारा निर्धारित काम करना पड़े, वह स्वतंत्र होते हुए भी दासता का जीवन जीता है।

त्वरित सुझाव: दासता की व्याख्या में कानूनी गुलामी के बाद सामाजिक नियंत्रण और व्यवसाय चुनने की स्वतंत्रता का अभाव अवश्य लिखिए।

11. अँधेरी रात चुपचाप आँसू बहा रही थी। निस्तब्धता करुण सिसकियों और आहों को बलपूर्वक अपने हृदय में ही दबाने की चेष्टा कर रही थी। आकाश में तारे चमक रहे थे। पृथ्वी पर कहीं प्रकाश का नाम नहीं। आकाश से टूटकर यदि कोई भावुक तारा पृथ्वी पर जाना भी चाहता तो उसकी ज्योति और शक्ति रास्ते में ही शेष हो जाती थी। अन्य तारे उसकी भावुकता अथवा असफलता पर खिलखिलाकर हँस पड़ते थे।

सियारों का क्रंदन और पेचक की डरावनी आवाज़ कभी-कभी निस्तब्धता को अवश्य भंग कर देती थी। गाँव की झोंपड़ियों से कराहने और कै करने की आवाज़, 'हरे राम ! हे भगवान !' की टेर अवश्य सुनाई पड़ती थी। बच्चे भी कभी-कभी निर्बल कंठों से 'माँ-माँ' पुकारकर रो पड़ते थे। पर इससे रात्रि की निस्तब्धता में विशेष बाधा नहीं पड़ती थी।

कुत्तों में परिस्थिति को ताड़ने की एक विशेष बुद्धि होती है। वे दिन-भर राख के घूरों पर गठरी की तरह सिकुड़कर, मन मारकर पड़े रहते थे। संध्या या गंभीर रात्रि को सब मिलकर रोते थे। [5 अंक]

11(i). अँधेरी रात चुपचाप आँसू क्यों बहा रही थी ? [1 अंक]

(A) जंगली पशुओं की डरावनी आवाज के कारण

(B) प्रकृति की असमर्थता व विवशता के कारण

(C) महामारी के कारण गाँव वालों की असहाय स्थिति से दुखी होने के कारण

(D) रात में व्याप्त अंधकार और सन्नाटे के डर के कारण

सही उत्तर: (C) महामारी के कारण गाँव वालों की असहाय स्थिति से दुखी होने के कारण

हल:

अवधारणा:

- प्रकृति का मानवीकरण करके लेखक गाँव की सामूहिक पीड़ा को अभिव्यक्त करता है।
- कारण चुनते समय कराहने, कै करने और निर्बल बच्चों के रोने जैसे प्रसंग-संकेतों को साथ पढ़ना चाहिए।

चरण 1: पीड़ा का कारण पहचानें झोंपड़ियों से कराहने और कै करने की आवाजें आती हैं। लोग भगवान को पुकार रहे हैं और बच्चे निर्बल स्वर में रोते हैं। ये संकेत महामारी से उत्पन्न असहायता और दुख का वातावरण बनाते हैं; रात के आँसू उसी पीड़ा की संवेदनशील अभिव्यक्ति हैं।

चरण 2: अन्य विकल्प जाँचें (A) में पशुओं की आवाजें केवल भयावह वातावरण का अंग हैं। (B) प्रकृति की विवशता को मूल कारण मानता है, जबकि केंद्र में पीड़ित गाँव वाले हैं। (D) अंधकार से डर को कारण बताता है, पर यहाँ रात लोगों के दुख में सहभागी है।

चरण 3: निष्कर्ष सही विकल्प (C) है। महामारी के कारण गाँव वालों की असहाय स्थिति से दुखी होकर अँधेरी रात मानो आँसू बहा रही थी।

त्वरित सुझाव: रात के मानवीकरण का कारण खोजते समय पशुओं की ध्वनि के बजाय बीमार मनुष्यों की कराह और असहायता पर ध्यान दें।

11(ii). स्तंभ-I को स्तंभ-II से सुमेलित कीजिए और सही विकल्प चुनकर लिखिए :

स्तंभ-I	स्तंभ-II
क. प्रकाश का नाम नहीं	(i) हार न मानना
ख. तारे की ज्योति और शक्ति का शेष होना	(ii) आशा और जिजीविषा का अभाव
ग. चित न होना	(iii) पीड़ित गाँव वालों की मदद न कर पाना

विकल्प : [1 अंक]

(A) क-(iii), ख-(i), ग-(ii)

(B) क-(ii), ख-(iii), ग-(i)

(C) क-(i), ख-(ii), ग-(iii)

(D) क-(i), ख-(iii), ग-(ii)

सही उत्तर: (B) क-(ii), ख-(iii), ग-(i)

हल:

अवधारणा:

- प्रतीकात्मक अर्थ में अंधकार निराशा और प्रकाश आशा का संकेत है।
- मुहावरे का अर्थ उसके प्रचलित प्रयोग और गद्यांश के भाव, दोनों से निर्धारित होता है।

चरण 1: तीनों पदों का अर्थ क. प्रकाश का नाम न होना आशा और जिजीविषा के अभाव को व्यक्त करता है, इसलिए क-(ii)। ख. तारे की ज्योति और शक्ति समाप्त हो जाने से वह पीड़ित गाँव तक सहायता नहीं पहुँचा पाता, इसलिए ख-(iii)। ग. चित न होना का आशय हार न मानना है, इसलिए ग-(i)।

चरण 2: विकल्पों का मिलान इन तीनों संबंधों का पूरा क्रम केवल (B) में है। (A) प्रकाश के अभाव को मदद न कर पाने से जोड़ता है। (C) और (D) प्रकाश के अभाव को हार न मानना बताते हैं। ये अर्थ उलटे हैं, इसलिए तीनों विकल्प असंगत हैं।

चरण 3: निष्कर्ष सही विकल्प (B) है : क-(ii), ख-(iii), ग-(i)।

त्वरित सुझाव: पहले सबसे स्पष्ट संबंध चित न होना = हार न मानना तय कीजिए; फिर प्रकाश और तारे के प्रतीक मिलाइए।

11(iii). रात्रि के भयावहपन का उल्लेख किस प्रभाव को दर्शाने के लिए किया गया है ? [1 अंक]

(A) महामारी की भयानकता और दुष्प्रभाव का उल्लेख करने हेतु

(B) निस्तब्धता में मानवीय पीड़ा की झलक दिखाने हेतु

(C) रात्रि में भी गाँव में हलकी चहल-पहल बताने हेतु

(D) रात में बच्चों के उत्साह व निडरता का प्रदर्शन करने हेतु

सही उत्तर: (A) महामारी की भयानकता और दुष्प्रभाव का उल्लेख करने हेतु

हल:

अवधारणा:

- वातावरण का वर्णन कथा की केंद्रीय त्रासदी के प्रभाव को तीव्र करता है।
- निस्तब्धता और भय के बीच कराहें महामारी से उत्पन्न व्यापक विनाश का अनुभव कराती हैं।

चरण 1: वर्णन का समग्र उद्देश्य रात का अंधकार, सियारों का क्रंदन, पेचक की आवाज और बीमार लोगों की कराह मिलकर मृत्यु-भय से भरा वातावरण रचते हैं। निर्बल बच्चों और असहाय मनुष्यों का चित्र महामारी की भयानकता और उसके दुष्प्रभाव को उभारता है।

चरण 2: विकल्पों में भेद (B) मानवीय पीड़ा की एक झलक अवश्य बताता है, किंतु भयावहपन का व्यापक प्रभाव (A) में अधिक पूर्ण

है। (C) की चहल-पहल निस्तब्धता के विरुद्ध है। (D) का उत्साह और निडरता निर्बल होकर रोते बच्चों के चित्र से मेल नहीं खाता।

चरण 3: निष्कर्ष सही विकल्प (A) है। रात्रि के भयावह वर्णन से महामारी की भयानकता और उसके दुष्प्रभाव को प्रभावशाली बनाया गया है।

त्वरित सुझाव: समग्र वातावरण का उद्देश्य पूछे जाने पर पीड़ा के किसी एक संकेत के बजाय पूरी त्रासदी को समेटने वाला विकल्प चुनिए।

11(iv). गद्यांश में इनमें से किसका उल्लेख नहीं मिलता है ? [1 अंक]

(A) रात्रि की निस्तब्धता

(B) तारों की भावुकता

(C) उत्तेजना युक्त उत्साह

(D) आहों का हृदय में दबना

सही उत्तर: (C) उत्तेजना युक्त उत्साह

हल:

अवधारणा:

- अनुल्लिखित तथ्य चुनने के लिए हर विकल्प का पाठ में स्पष्ट आधार खोजना चाहिए।
- इस अंश का प्रमुख स्वर करुणा, भय और निराशा है; उत्साह का स्वर अनुपस्थित है।

चरण 1: उल्लिखित बातों की पहचान अंश में रात्रि की निस्तब्धता का बार-बार वर्णन है, इसलिए (A) उपस्थित है। पृथ्वी पर आना चाहने वाले तारे को भावुक बताया गया है, इसलिए (B) भी है। निस्तब्धता करुण सिसकियों और आहों को अपने हृदय में दबाती है, जिससे (D) का सीधा आधार मिलता है।

चरण 2: अनुपस्थित भाव चुनें अंश में बीमारी, असहायता, कराह और निर्बल रोने का वातावरण है। कहीं उत्तेजना से भरे उत्साह का वर्णन नहीं मिलता। बच्चों की पुकार दुख से उपजी है और तारों की हँसी भी मानवीय उत्साह का प्रसंग नहीं है। अतः (C) अनुल्लिखित बात है।

चरण 3: निष्कर्ष सही विकल्प (C) है। गद्यांश में उत्तेजना युक्त उत्साह का उल्लेख नहीं मिलता।

त्वरित सुझाव: नहीं मिलता वाले प्रश्न में तीन उपस्थित बातों के शब्द पाठ में खोजकर बचा हुआ विकल्प चुनिए।

11(v). 'पेचक की डरावनी आवाज़' का प्रतीकार्थ है – [1 अंक]

(A) जीव-जंतुओं की सक्रियता

(B) मृत्यु या अनिष्ट की आहट

(C) पक्षियों की स्वाभाविक ध्वनि

(D) ग्रामीण परिवेश की सजीवता

सही उत्तर: (B) मृत्यु या अनिष्ट की आहट

हल:

अवधारणा:

- प्रतीकार्थ किसी वस्तु या ध्वनि का प्रसंग में उभरने वाला सांकेतिक आशय होता है।
- भयावह ध्वनियाँ यहाँ बीमारी और मानवीय असहायता के बीच अनिष्ट की आशंका बढ़ाती हैं।

चरण 1: प्रसंग से संकेत समझें पेचक की आवाज को डरावनी कहा गया है। उसके साथ सियारों का क्रंदन, बीमारों की कराह और अँधेरी निस्तब्ध रात उपस्थित हैं। इन संकेतों के बीच यह ध्वनि मृत्यु अथवा किसी अनिष्ट के निकट होने की अनुभूति कराती है।

चरण 2: शाब्दिक और प्रतीकात्मक अर्थ अलग करें (A) जीव-जंतुओं की सामान्य सक्रियता बताता है और (C) ध्वनि का केवल स्वाभाविक पक्ष बताता है; दोनों प्रतीकार्थ नहीं बताते। (D) की सजीवता भी यहाँ के करुण और भयावह भाव को नहीं समेटती। मृत्यु या अनिष्ट की आहट वाला (B) ही संदर्भानुकूल है।

चरण 3: निष्कर्ष सही विकल्प (B) है। पेचक की डरावनी आवाज मृत्यु या अनिष्ट की आहट का प्रतीक है।

त्वरित सुझाव: प्रतीकार्थ पूछे जाने पर ध्वनि के सामान्य स्रोत से आगे बढ़कर उसके साथ जुड़े भय और अनिष्ट के संकेत पहचानिए।

12(i). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 100 शब्दों में लिखिए :

" 'सिल्वर वैडिंग' कहानी का कथानक आधुनिक पाश्चात्य संस्कृति के अंधानुकरण एवं बदलते मानवीय मूल्यों पर आधारित है।" इस कथन को स्पष्ट करते हुए उन मूल्यों का उल्लेख कीजिए जो वर्तमान में बदल रहे हैं। [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कहानी में यशोधर बाबू और उनकी नई पीढ़ी के जीवन-दृष्टिकोणों का अंतर बदलते सामाजिक मूल्यों को प्रकट करता है।
- आलोचनात्मक उत्तर में प्रसंग और उसका आशय जोड़ना आवश्यक है; हर आधुनिक परिवर्तन को बुरा कहना कहानी का संतुलित विवेचन नहीं है।

चरण 1: कथानक से कथन का संबंध यशोधर बाबू की विवाह की पच्चीसवीं वर्षगाँठ पर आयोजित उत्सव पाश्चात्य ढंग के उत्सव और उनकी पारंपरिक जीवन-दृष्टि के बीच अंतर को सामने लाता है। उनके बच्चे आधुनिक जीवन-शैली को सहज स्वीकारते हैं, जबकि वे पुराने संस्कारों और किशनदा जैसे आत्मीय व्यक्तियों की स्मृतियों से जुड़े हैं। इस अंतर से कहानी का पीढ़ीगत तनाव बनता है।

चरण 2: बदलते मूल्यों की पहचान उत्तर में बड़ों के सम्मान, परिवार में संवाद, आत्मीय संबंध, सादगी और सामूहिक उत्तरदायित्व के स्थान पर बढ़ते प्रदर्शन, उपभोग और व्यक्तिगत सुविधा का उल्लेख किया जा सकता है। किंतु बच्चों में पिता के प्रति लगाव भी है; इसलिए उन्हें पूर्णतः संवेदनहीन कहना अनुचित होगा। समस्या नए ढंग अपनाने मात्र की नहीं, उनके बीच संबंधों की गरिमा खोने की है।

चरण 3: लगभग 100 शब्दों में उत्तर 'सिल्वर वैडिंग' में यशोधर बाबू और उनके बच्चों की जीवन-दृष्टि का अंतर बदलते मूल्यों को उजागर करता है। विवाह की पच्चीसवीं वर्षगाँठ का पाश्चात्य ढंग से आयोजन उन्हें असहज करता है। वे सादगी, आत्मीयता और पुरानी सामाजिक मर्यादाओं से जुड़े हैं, जबकि नई पीढ़ी आधुनिक सुविधाओं तथा प्रदर्शन को महत्त्व देती है। परिवार में संवाद, बड़ों की भावनाओं का सम्मान और सामूहिकता कमजोर पड़ रहे हैं; उनकी जगह व्यक्तिगत सुविधा, उपभोक्तावाद और दिखावा बढ़ रहा है। बच्चों का पिता के प्रति स्नेह फिर भी बना हुआ है। कहानी आधुनिकता अपनाते समय मानवीय संवेदना और संबंधों की गरिमा बचाने की आवश्यकता रेखांकित करती है।

चरण 4: निष्कर्ष कहानी का केंद्रीय प्रश्न बदलती जीवन-शैली के बीच आत्मीयता, संवाद और पारिवारिक सम्मान को बनाए रखना है।

त्वरित सुझाव: उत्सव के प्रसंग को किसी एक बदलते मूल्य से जोड़ें; केवल पाश्चात्य संस्कृति की निंदा करने से बचें।

12(ii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 100 शब्दों में लिखिए :

पाठशाला पहुँचकर 'जूझ' कहानी के लेखक को किन-किन परेशानियों का सामना करना पड़ा ? लेखक किन विशेषताओं के कारण उन परिस्थितियों में भी अडिग रहे ? [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- आनंद यादव का आत्मकथात्मक पाठ शिक्षा पाने के लिए किए गए संघर्ष और उनकी दृढ़ इच्छाशक्ति को सामने लाता है।
- चरित्र की विशेषता को उसके व्यवहार से सिद्ध करें: अपमान सहकर पढ़ना उनकी सहनशीलता और लगन का प्रमाण है।

चरण 1: पाठशाला की परेशानियाँ पहचानें पढ़ाई का क्रम टूट जाने के बाद लौटे लेखक को कक्षा के बदले वातावरण से सामंजस्य बैठाना पड़ा। पहनावे और देहाती रूप के कारण सहपाठियों की हँसी तथा शरारत का सामना करना पड़ा। शरारती बच्चे उनका गमछा खींचकर आपस में उछालते थे। ऐसे व्यवहार से उनका संकोच और असुरक्षा बढ़ती थी।

चरण 2: अडिग रहने के कारण समझें लेखक खेती के कठिन जीवन से निकलने और अपनी स्थिति बदलने के लिए शिक्षा का महत्त्व समझते थे। सीखने की तीव्र इच्छा, आत्मसम्मान, सहनशीलता और परिश्रम ने उन्हें अपमान के बावजूद पढ़ाई से जोड़े रखा। यहाँ कठिनाइयों का वर्णन केवल बच्चों की शरारत गिनाने के लिए नहीं है। उनसे स्पष्ट होता है कि लेखक के सामने सामाजिक झिझक और मनोबल बनाए रखने की चुनौती भी थी। वे तत्काल अपमान की अपेक्षा शिक्षा से मिलने वाले दीर्घकालीन अवसर को अधिक महत्त्व देते थे। पढ़ाई में आगे बढ़ने का संकल्प और अच्छे साथियों तथा शिक्षकों का सहयोग उनके आत्मविश्वास का आधार बने।

चरण 3: लगभग 100 शब्दों में उत्तर पाठशाला पहुँचने पर लेखक को नए वातावरण में घुलने-मिलने और छूटी पढ़ाई सँभालने में परेशानी हुई। उनके देहाती पहनावे का मजाक उड़ाया जाता था। शरारती सहपाठी उनका गमछा खींचकर उछालते थे, जिससे उन्हें अपमान और संकोच अनुभव होता था। फिर भी वे पढ़ाई छोड़कर नहीं भागे। शिक्षा प्राप्त करने की तीव्र इच्छा, दृढ़ निश्चय, सहनशीलता और परिश्रम ने उन्हें अडिग रखा। वे जानते थे कि पढ़-लिखकर ही खेती के कठिन जीवन से आगे बढ़ सकते हैं। योग्य साथियों और शिक्षकों के सहयोग से उनका आत्मविश्वास बढ़ा। सीखने की लगन ने प्रतिकूल परिस्थितियों पर विजय पाने की शक्ति दी।

चरण 4: निष्कर्ष लेखक ने उपहास और झिझक का सामना अध्ययन के प्रति लगन, धैर्य और अपने भविष्य को बदलने के संकल्प से किया।

त्वरित सुझाव: उत्तर में पहले विद्यालय की ठोस परेशानियाँ लिखें, फिर प्रत्येक परेशानी के सामने लेखक की दृढ़ता और अध्ययन-लगन दिखाएँ।

12(iii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 100 शब्दों में लिखिए :

'अतीत में दबे पाँव' पाठ के आधार पर सिंधु घाटी सभ्यता की जल व्यवस्था का वर्णन करते हुए स्पष्ट कीजिए कि वर्तमान में जल-संरक्षण की आवश्यकता क्यों हो गई है ? [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- ओम थानवी के यात्रा-वृत्तांत 'अतीत में दबे पाँव' में मोहनजोदड़ो की नगर-योजना के माध्यम से सिंधु सभ्यता के विकसित नागरिक जीवन का परिचय मिलता है। कुएँ, स्नानागार और ढकी नालियाँ उसकी सुव्यवस्थित जल व्यवस्था के प्रमाण हैं।
- प्रश्न ऐतिहासिक विवरण को वर्तमान जीवन से जोड़ने की अपेक्षा करता है। उत्तर में पाठ के तथ्य देने के बाद जल-संकट के कारण और संरक्षण की आवश्यकता स्पष्ट करनी चाहिए।

चरण 1: पाठ से जल व्यवस्था के प्रमाण चुनना मोहनजोदड़ो में अनेक कुएँ थे, जिनसे नागरिकों को पानी मिलता था। घरों में स्नान की व्यवस्था और प्रयुक्त जल निकालने वाली नालियाँ थीं। नालियाँ ढकी हुई थीं और नगर की निकासी व्यवस्था से जुड़ी थीं। महाकुंड का निर्माण भी योजनाबद्ध ढंग से हुआ था; उसे जलरोधी बनाने और पानी की निकासी का ध्यान रखा गया था। इन तथ्यों से जल की उपलब्धता, स्वच्छता और निकासी के प्रति तत्कालीन नागरिक सजगता प्रकट होती है। केवल विशाल इमारतों का उल्लेख करने से प्रश्न का जल संबंधी पक्ष स्पष्ट नहीं होगा।

चरण 2: वर्तमान आवश्यकता से संबंध स्थापित करना बढ़ती जनसंख्या तथा घरेलू, कृषि और औद्योगिक उपयोग से पानी की माँग बढ़ी है। भूजल का अत्यधिक दोहन, जलस्रोतों का प्रदूषण और पानी की बरबादी उपयोग योग्य जल को घटाते हैं। इसलिए वर्षाजल-संचयन, परंपरागत स्रोतों की रक्षा तथा विवेकपूर्ण उपयोग आवश्यक हैं। उत्तर में प्राचीन व्यवस्था को आधुनिक तकनीक के समान बताने के बजाय उसकी योजनाबद्धता और नागरिक जिम्मेदारी से प्रेरणा लेने की बात रखनी चाहिए।

चरण 3: लगभग 100 शब्दों में आदर्श उत्तर 'अतीत में दबे पाँव' के अनुसार सिंधु घाटी सभ्यता की जल व्यवस्था सुविकसित थी। मोहनजोदड़ो में अनेक कुएँ, घरों में स्नान-स्थल तथा जल-निकासी के लिए ढकी नालियाँ थीं। महाकुंड की जलरोधी बनावट और निकासी की व्यवस्था तत्कालीन तकनीकी समझ तथा स्वच्छता-बोध दिखाती है। आज बढ़ती आबादी, भूजल के अत्यधिक दोहन, प्रदूषण और पानी की बरबादी से स्वच्छ जल का संकट बढ़ रहा है। इसलिए जल-संरक्षण जीवन और भावी पीढ़ियों की सुरक्षा के लिए आवश्यक है। वर्षाजल-संचयन, जलस्रोतों की रक्षा और पानी का विवेकपूर्ण उपयोग करके हम उस सभ्यता की योजनाबद्धता से प्रेरणा ले सकते हैं।

चरण 4: निष्कर्ष सिंधु सभ्यता की जल व्यवस्था नागरिक सुविधाओं और स्वच्छता के प्रति सजगता दर्शाती है। वर्तमान जल-संकट हमें जलस्रोतों की रक्षा और पानी के जिम्मेदार उपयोग की आवश्यकता समझाता है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में पहले कुएँ, स्नान-स्थल और ढकी नालियों जैसे पाठगत प्रमाण दें; फिर जल-संकट के कारण तथा संरक्षण की आवश्यकता को उनसे जोड़ें।